राज
कॉमिक्स विशेषांक
संख्या 0002
ग्रैंड मास्टर रोबो
सुपरकमांडो ध्रुव
RAJ COMICS
राज कॉमिक्स
BY MANOJ GUPTA

राज
कॉमिक्स विशेषांक
मूल्य 20.00 संख्या 02
ग्रैंड मास्टर रोबो
सुपर कमांडो ध्रुव

कहते हैं कि मास्बा सांप का काटा *पानी* भी नहीं मांगता। लेकिन इस दुनिया में एक ऐसा *भयंकर* मानव भी है, जिसके लिए इस अत्यधिक विषैले सांप का जहर, एक हल्के से नशे से ज्यादा और कुछ नहीं है। कई लोगों का मानना तो यह है, कि उसकी *रगों* में खून नहीं, बल्कि सांप का जहर बहता है। और इस *भयानक* शख्स का रास्ता काटने वाला कभी जिंदा नहीं बचता। अपराध जगत के इस *बेताज* शहंशाह को उसके गुलाम एक ही नाम से जानते हैं -

ग्रैंड मास्टर रोबो

जिसके 'अपराध- जगत के शहंशाह' से 'पूरी दुनिया के बादशाह' बनने के सपने के बीच एक ऐसा युवक दीवार बनकर खड़ा हुआ है, जिसके लिए मानवता और मानवों की जान की कीमत के सामने, अपनी जिंदगी की कीमत कुछ नहीं है। जो ग्रैंडमास्टर रोबो की आंखों में कांटा बनकर इसलिए खटकता है, क्योंकि उसके हाथों *रोबो* दो बार मात खा चुका है। इसीलिए ग्रैंडमास्टर ने कसम खाई है कि इस बार या तो वह बचेगा, या उसका जानी दुश्मन -

सुपर कमांडो ध्रुव

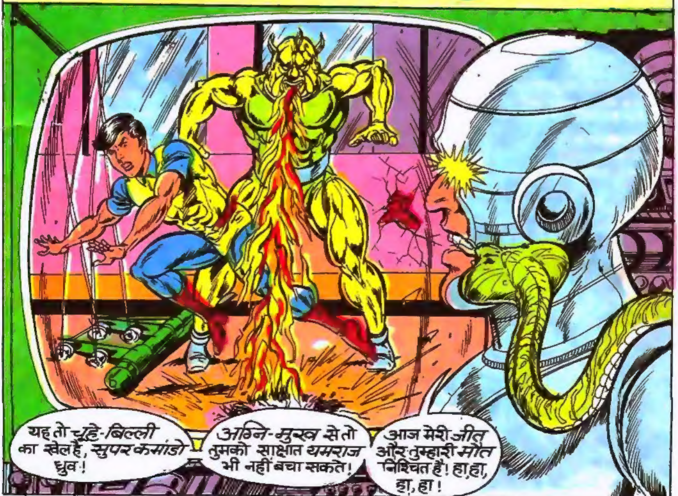

समुद्र की अथाह गहराईयां, जहां पर विशालकाय मछलियों और खतरनाक समुद्री जीवों का राज्य रहता है—
आज एक मानवाकृति कुछ यंत्र फिट कर रही थी—
हैलो, चीफ! मिश्ती हियर! काम पूरा हो गया है।
अब मैं यहां से निकलता हूं! आप पंद्रह मिनट बाद सिग्नल भेजिएगा।
मिश्ती का मैसेज आ गया है, मास्टर! 'न्यूक्लियर टेस्ट' के लिए सारे यंत्र फिट किए जा चुके हैं! अब सिर्फ 'रिमोट-कंट्रोल' से सिग्नल भेजने की देर है!
देर क्यों? सिग्नल तुरंत चालू कर दो!
ले... लेकिन, मास्टर, अगर इस वक्त धमाका हुआ, तो मिश्ती उसकी चपेट में आ जाएगा।
हर महान कार्य अपने हिस्से की बलि मांगता है।
और जितने कम लोग इस प्रोजेक्ट के बारे में जानें, उतना ही अच्छा है!
सिग्नल भेजो!
आदेश मिलते ही दो हाथ हरकत में आ गए—
और अदृश्य 'रेडियो-तरंगें' अपने स्रोत से निकल कर...
...निशाने की तरफ बढ़ चलीं—
रेडियो-तरंगों का यंत्रों से संपर्क हुआ—
और एक भयंकर धमाका हुआ—
इसके बाद मिश्ती कहां गया, यह किसी को पता नहीं चला।
और न ही किसी को यह जानने में दिलचस्पी थी—
बड़ममम
इस विनाशकारी 'न्यूक्लियर ब्लास्ट' का असर समुद्र की सतह तक भी आया—

और फिर धीरे-धीरे सब शांत हो गया—
अब इस धमाके का एकमात्र मूक गवाह था—
मूंगे की मोटी दीवार में धमाके के कारण बना एक बड़ा छेद!
कहीं पर- इस धमाके से खुशियों की लहर दौड़ रही थी।
सफलता! सक्सेस!! कामयाबी!!! हमारा 'न्यूक्लियर टेस्ट' कामयाब हो गया!
अब हमारा गैंग, संसार का पहला ऐसा आतंकवादी संगठन हो गया है, जिसके पास न्यूक्लियर बम है!
अब मुझे दुनिया पर राज्य करने से कोई नहीं रोक सकता!
हा हा हा हा!
अगले दिन सुबह—
आज लगता है, कि हम लोग कुछ ज्यादा जल्दी आ गए हैं, भइया!
'बीच' पर हमारे अलावा और कोई नहीं दिख रहा है!
जल्दी? सात बजने वाले हैं देवी जी! आज आपके चक्कर में हम भी लेट हो गए। सब लोग घूम कर जा भी चुके होंगे!
अच्छा, अच्छा! चुपचाप दौड़ो! वर्ना बोलते-बोलते ही सांस फूल जाएगी!
और अगर ज्यादा बोले, तो पानी में ढकेल...
आऊ!
तभी श्वेता का पैर किसी उभरी चीज से टकराया और-
हा हा हा हा हा! देखा! दूसरों का बुरा चाहने वाले का खुद बुरा होता है! अब तुम स्नान-ध्यान करो; तब तक मैं चक्कर मार कर आता....
पर जाने क्यों, समुद्र आज कुछ ज्यादा ही अशांत था।

...हूंऊऊऊऊऊऊ!!
हाहा!
अरे, जैसे को तैसा मिला, कैसा मजा आया! खूब मजा आया!...
...आया!...
ओ गाई गॉड!
ध्रुव ने भी नजर घुमा कर श्वेता के आश्चर्य का कारण जाना चाहा और वह खुद भी चकित रह गया–
उसको भिगोने वाली विशालकाय लहर तो वापस लौट गई थी।
लेकिन अपने पीछे छोड़ गई थी हजारों मृत समुद्री मछलियां! जहां तक नजर जाती थी, तट मरे समुद्री जीवों से पटा पड़ा था।
तभी- ध्रुव के कॉलर में लगा 'बटन ट्रांसमीटर' तेज सिग्नल देने लगा! ध्रुव उस सिग्नल की खास आवाज तुरंत पहचान गया–
रेडियो एक्टिविटी!
पिंग पिंग पिंग
....यानि इन मृत मछलियों में रेडियो-एक्टिविटी की मात्रा बहुत अधिक है!
श्वेता, भागो!
वर्ना जान का खतरा हो सकता है!
रेडियो-एक्टिविटी!
अजीब संयोग है!!...
आज दोपहर में हमारी क्लास स्पेशल परमीशन लेकर, 'राजापुर एटॉमिक पावर स्टेशन' देखने जा रही है! और सुबह-सुबह ही रेडियो एक्टिविटी के दर्शन हो गए!
हैलो, पुलिस हेडक्वार्टर! ध्रुव हियर!
आप कुछ न्यूक्लियर-विशेषज्ञों के साथ तुरंत 'अक्सा बीच' पर पहुंचिए! बस! ...टॉप अर्जेंट! ओवर!
आधे घंटे के अंदर- पुलिस ने पूरे इलाके को घेर लिया–
तुम्हारा शक सही है, ध्रुव! इन मछलियों में जबर्दस्त रेडियो एक्टिविटी है! और इनकी मौत का कारण भी एकदम साफ है! ये सारे समुद्री जीव किसी न्यूक्लियर ब्लास्ट में मरे हैं!
न्यूक्लियर-धमाका!? समुद्र के अंदर?
लेकिन यह किसका काम हो सकता है?

अभी तो इस विषय में अनुमान भी नहीं लगाया जा सकता है!
पर इतना तो पक्का है, कि जिसने भी इतने गुप्त रूप से यह काम किया है, उसके इरादे नेक नहीं हैं!
और वह आदमी कौन है, यह तो कई दिनों की कड़ी छान-बीन के बाद ही पता लग पाएगा!
और इतना समय दुनिया को तबाह करने के लिए काफी है! ...
घर पहुंचने के बाद भी ध्रुव का दिमाग इसी गुत्थी में उलझा हुआ था—
अगर यह पता चल जाए, कि यह धमाका किस जगह पर हुआ है, तो आगे का काम थोड़ा आसान...
अरे! ध्रुव, अंडे के बजाय, हलवे पर नमक क्यों डाल रहे हो?
कहां दिमाग है तुम्हारा?
ओह! मैं कुछ सोच रहा था, मम्मी!
जरूर उसी न्यूक्लियर ब्लास्ट के बारे में सोच रहे होगे! लेकिन, ध्रुव, यह मामला हमारी डिफेंस मिनिस्ट्री का है! तुम्हारा नहीं!
इस घटना की गंभीरता को कोई समझ नहीं रहा है, पापा! यह एक भयानक विनाश की शुरुआत का संकेत है! अगर जल्दी ही इस मामले को निपटाया नहीं गया,...
...तो लाखों जानें एक झटके में खत्म हो जाएगीं! अगर मुझे किसी तरह से ये पता चल जाता, कि यह धमाका समुद्र के अंदर किस जगह पर हुआ है, तो कुछ शुरुआत होती! लेकिन यह मुझे कहां से पता चलेगा?
वेरी छोटी प्रॉब्लम, डियर ब्रदर!
तुम तो जानवरों से बात कर ही लेते हो! इस बार अपनी विद्या मछलियों पर आजमा कर देखो! शायद बात बन जाए!
पानी में डुबकी मारो! और किसी पढ़ी-लिखी व्हेल से पूछो कि, मैडम, क्या आप जानती हैं कि समुद्र में न्यूक्लियर बम कहां फटा है?...
शटअप, श्वेता!
हर समय मजाक अच्छा नहीं लगता है!
लेकिन ध्रुव ने श्वेता की बात को मजाक में नहीं लिया।
व्हाट एन आइडिया! मछलियों से बात!!
अरे, ध्रुव, कहां चल दिए? नाश्ता तो करते जाओ!
रुक जाओ, भइया! यह कीमती सलाह एकदम फ्री है! मैं इसका पैसा नहीं लूंगी! डरो मत!...

जाते हो तो जाओ!
मैं भी चली! आज मुझे भी अपनी क्लास के साथ राजापुर जाना है! एटॉमिक पावर स्टेशन देखने।
अरे, पर तू तो नाश्ता करती जा!
नहीं, मम्मी! मुझे बिल्कुल भूख नहीं है!
इस पेटू को आज क्या हो गया?
भइया ने आज मेरी वजह से नाश्ता नहीं किया! इसी लिए आज मैं भी नाश्ता नहीं करूंगी!
बाय, मम्मी!
और श्वेता और ध्रुव दो अलग रास्तों पर चल दिए। पर दोनों ही यह नहीं जानते थे कि उन रास्तों पर उनका इंतजार कर रही है-मौत
उधर- मोटरसाइकल पर उड़ते जा रहे ध्रुव के दिमाग में बचपन की यादें खलबली मचा रही थीं-
वे यादें, जो अब तक दिमाग के न जाने किस कोने में दबी थीं!
जुपिटर सर्कस की यादें! सर्कस के 'डॉल्फिन शो' की यादें! और अन्ना की यादें!
अन्ना- जिसके एक इशारे पर डॉल्फिनें अपनी जान की बाजी लगाने से भी नहीं हिचकती थीं।
ध्रुव को अन्ना के साथ अपनी पहली बातचीत भी याद आ रही थी-
अन्ना, पापा कहते हैं कि आप मछलियों से बात कर लेते हैं!
'मछलियों' से? नहीं तो!
तुम्हारे पापा को गलतफहमी हो गई होगी!
मेरे पापा कभी झूठ नहीं बोलते!
हाहाहा, अरे, मैं तो मजाक कर रहा था।
लेकिन मैं मछलियों से नहीं, सिर्फ 'मछली' से बात कर पाता हूं! एक मछली से!
कौन सी मछली से, अन्ना?
डॉल्फिन मछली से। बहुत समझदार होती हैं ये! इनसे तो कोई भी बात कर सकता है!
सच? तो मुझे भी सिखाओ न, अन्ना!
जरूर, राजा बेटा! शुभ काम में देर कैसी? चलो, अभी से शुरू कर देते हैं!...
और फिर, धीरे-धीरे मैं भी अन्ना की तरह, डॉल्फिनों से बातें करने लगा! लेकिन अन्ना की असमय मौत से वह 'डॉल्फिन शो' बंद हो गया!
और मैं भी धीरे-धीरे, दूसरे करतबों को सीखने की धुन में यह विद्या भूलता चला गया!

आज यह पता चल जाएगा, कि अन्ना की सिखाई विद्या मुझे अब तक याद है, या मैं उसे भूल गया!
ध्रुव के होंठों से एक खास तरह की सीटी उभरी, जो डॉल्फिनों को बुलाने का इशारा था।
लेकिन पांच मिनट बीत गए, और-
कुछ भी नहीं हुआ! लगता है कि मैं कुछ भूल रहा हूं! या शायद आसपास कोई भी डॉल्फिन नहीं है!
-चलो, अब छानबीन का कोई नया तरीका अपनाना पड़ेगा!
ध्रुव वापस जाने के लिए पलटा-
लेकिन कुछ सुनकर रुक गया-
समुद्र की लहरों के बीच से, एक उसके जैसी ही सीटी की आवाज आ रही थी-
और कुछ ही पलों बाद- ध्रुव को अपनी तरफ आती एक काली आकृति दिखाई पड़ी-
डॉल्फिन!
और फिर- ध्रुव और डॉल्फिन के बीच में, तेज और धीमी सीटियों में बातचीत शुरू हो गई।
ध्रुव को जो जानकारी चाहिए थी, वह उसे मिल रही थी।
लेकिन अब तक देर हो चुकी थी।
क्योंकि इस वक्त, राजनगर और राजापुर के तटों के बीच का समुद्र जैसे खौल रहा था-
और उस खौलते पानी के बीच से निकल रही थी, एक अत्यंत भयंकर आकृति!
जिसकी एक झलक, किसी के दिल की धड़कन रोक देने के लिए काफी थी-
आह!
मेरी नसें सूख रही हैं! मेरा दिमाग सुन्न हो रहा है!
मुझे एनर्जी चाहिए!
एनर्जी!!
ढेर सी एनर्जी!

इन मोटे तारों में जरूर 'हाई वोल्टेज' बिजली की धारा बह रही होगी!
इससे कम से कम मेरी थोड़ी सी तो प्यास बुझेगी!
आऽऽऽ!
उस भयावह आकृति के मुंह से रोशनी की एक तेज लपट निकली।
और 'हाई-टेंशन केबिल' को थामने वाले लोहे के मोटे गार्डर, मोम के समान पिघलने लगे।
और नीचे गिरते बिजली के नंगे तारों ने उस आकृति को अपनी लपेट में ले लिया—
बिजली की प्रचंड धारा, जिसका हल्का सा स्पर्श किसी को खाक कर देने के लिए काफी था, उसके शरीर में ऐसे समाने लगी...
...जैसे सूखी जमीन में पानी!
हाहाहाहा! अब अग्निमुख को कुछ चैन पड़ा!
तारों के टूटने से शहर के एक बड़े हिस्से में बिजली गुल हो गई—
और लीजिए! बिजली रानी नाराज हो कर चली गईं।
होंगी ही! तुम्हारा ट्रांसमीटर उनसे इतना काम जो कराता है!
खैर घबराओ मत! अपने पास हर प्रॉब्लम की काट मौजूद है, पार्टनर! मैं अभी जेनरेटर चालू करता हूं! शायद कोई हमें मैसेज भेजने की कोशिश कर रहा हो!
पीटर का ख्याल एकदम सही था।
क्योंकि ट्रांसमीटर ऑन करते ही—
ध्रुव हियर, पीटर! मैं तुमको जो जो सामान बताता हूं, तुम उसे लेकर जल्दी से जल्दी 'कर्ली सी फेस' पर पहुंचो!
बोलो, ध्रुव!
मैं नोट करता हूं!
और दूर कहीं पर-
इतनी जरा सी एनर्जी से कुछ नहीं होगा! इससे तो मेरी प्यास और बढ़ गई!
ये तार उधर से आ रहे हैं!
यानि उधर कोई पावर हाउस जरूर होगा! उसी से मेरी प्यास बुझेगी!

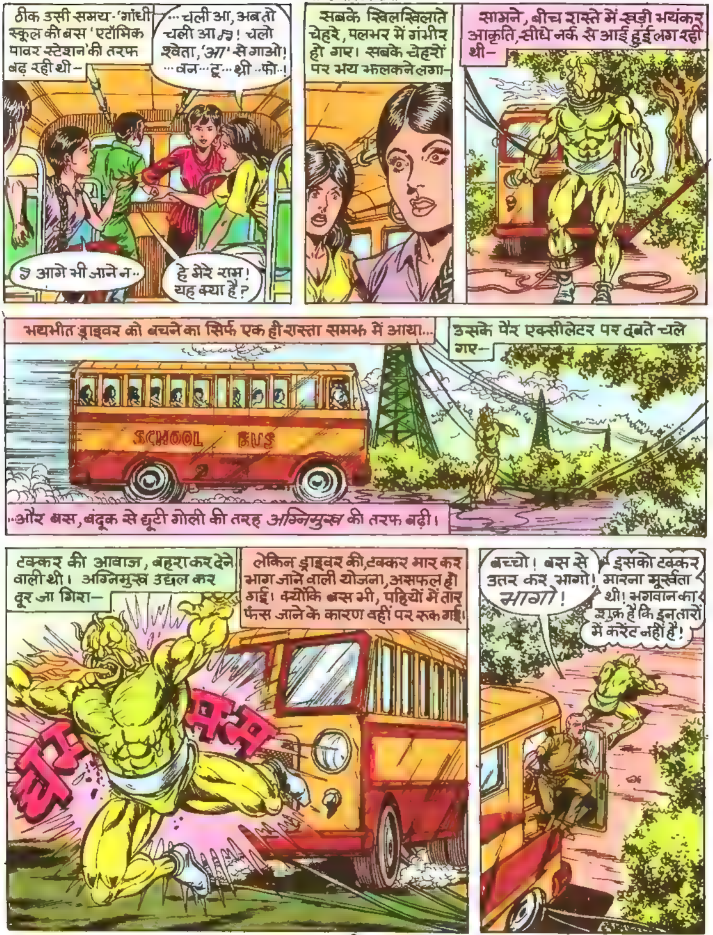
ठीक उसी समय-'गांधी स्कूल की बस' एटॉमिक पावर स्टेशन' की तरफ बढ़ रही थी–
...चली आ, अब तो चली आ ♫! चलो श्वेता, 'आ' से गाओ! ...वन...टू...थ्री...फो..!
♫ आगे भी जाने न..
हे मेरे राम! यह क्या है?
सबके खिलखिलाते चेहरे, पलभर में गंभीर हो गए। सबके चेहरों पर भय झलकने लगा–
सामने, बीच रास्ते में खड़ी भयंकर आकृति, सीधे नर्क से आई हुई लग रही थी–
भयभीत ड्राइवर को बचने का सिर्फ एक ही रास्ता समझ में आया...
उसके पैर एक्सीलेटर पर दबते चले गए–
SCHOOL BUS
...और बस, बंदूक से छूटी गोली की तरह *अग्निमुख* की तरफ बढ़ी।
टक्कर की आवाज, बहरा कर देने वाली थी। अग्निमुख उछल कर दूर जा गिरा–
लेकिन ड्राइवर की, टक्कर मार कर भाग जाने वाली योजना, असफल ही गई। क्योंकि बस भी, पहियों में तार फंस जाने के कारण वहीं पर रुक गई।
धम मम
बच्चो! बस से उतर कर भागो! *भागो!*
इसको टक्कर मारना मूर्खता थी! भगवान का शुक्र है कि इन तारों में करेंट नहीं हैं!

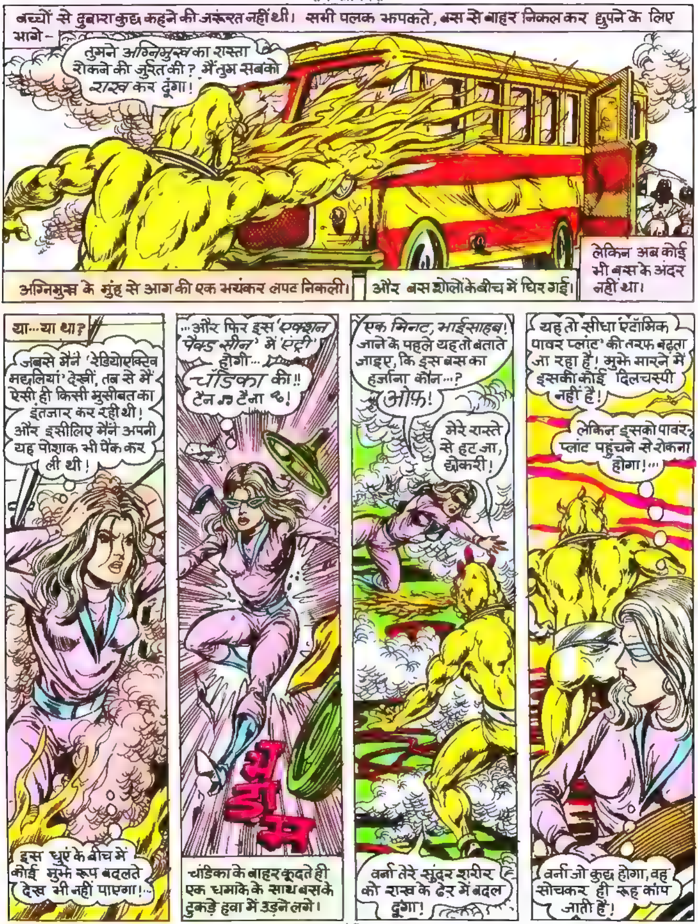

बच्चों से दुबारा कुछ कहने की जरूरत नहीं थी। सभी पलक झपकते, बस से बाहर निकल कर छुपने के लिए भागे–
तुमने अग्निमुख का रास्ता रोकने की जुर्रत की? मैं तुम सबको राख कर दूंगा!
अग्निमुख के मुंह से आग की एक भयंकर लपट निकली।
और बस शोलों के बीच में घिर गई।
लेकिन अब कोई भी बस के अंदर नहीं था।
या…या था?
जबसे मैंने 'रेडियोएक्टिव मछलियां' देखीं, तब से मैं ऐसी ही किसी मुसीबत का इंतजार कर रही थी! और इसीलिए मैंने अपनी यह पोशाक भी पैक कर ली थी!
इस धुएं के बीच में कोई मुझे रूप बदलते देख भी नहीं पाएगा!…
…और फिर इस 'एक्शन पैक्ड सीन' में 'एंट्री' होगी… चंडिका की!! टैन टैना!
धड़ाम
चंडिका के बाहर कूदते ही एक धमाके के साथ बस के टुकड़े हवा में उड़ने लगे।
एक मिनट, भाईसाहब! जाने के पहले यह तो बताते जाइए, कि इस बस का हर्जाना कौन…?
ऊ ओफ!
मेरे रास्ते से हट जा, छोकरी!
वर्ना तेरे सुंदर शरीर को राख के ढेर में बदल दूंगा!
यह तो सीधा 'एटॉमिक पावर प्लांट' की तरफ बढ़ता जा रहा है! मुझे मारने में इसकी कोई दिलचस्पी नहीं है!
लेकिन इसको पावर-प्लांट पहुंचने से रोकना होगा!…
वर्ना जो कुछ होगा, वह सोचकर ही रूह कांप जाती है!

बस का, भारी लोहे का चक्का, अग्निमुख के शरीर से टकराया–
और अग्निमुख तारों के बीच में जा गिरा–
–चंडिका ने बिजली की-सी फुर्ती से तार को पकड़कर खींचा।
और अग्निमुख का शरीर लोहे की एक मजबूत कुंडली में कैद हो गया–
अब क्या इरादा है, मि० ज्वालामुखी?
शांति से मेरे साथ चलते हो, या दो-चार हाथ और दिखाऊं?
हाहाहा!
मूर्ख लड़की!
तू समझती है, कि तू मुझे पकड़ सकती है! हः, तो ले!
और अगले ही पल- अग्निमुख के शरीर से बिजली की एक हाई-वोल्टेज करेंट निकली, और चंडिका का पूरा शरीर झनझना उठा।
अब जिंदगी और मौत के बीच में सिर्फ चार कदम की दूरी थी–
और चंडिका बचने के लिए कुछ भी नहीं कर सकती थी।
और-किसी गुप्त स्थान पर-
मास्टर! गजब हो गया। हमारे 'न्यूक्लियर ब्लास्ट' में मरी मछलियाँ राजनगर के तट पर पहुंच गई हैं!
हे शैतान! तुरंत अपने कुछ आदमियों को 'ब्लास्ट' वाली जगह पर भेजो! ...
...ताकि वे वहां लगे सारे यंत्र निकाल लाएं। वर्ना उनके जरिए, कोई हम तक भी पहुंच सकता है! और यह काम तुरंत होना चाहिए!
कहीं वहां पर कोई हमसे पहले पहुंच गया, तो पूरे संसार की जासूसी एजेंसियां हमारी तलाश करने लगेंगी!
ग्रेंडमास्टर रोबो का शक बेबुनियाद नहीं था–
क्योंकि ठीक उसी वक्त- एक डॉल्फिन के पीछे दो आकृतियां न्यूक्लियर ब्लास्ट वाले स्थान की तरफ बढ़ रही थीं।

अब रेडिएशन का स्तर बढ़ रहा है! यहां से तुम वापस लौट जाओ, दोस्त!
वर्ना तुम्हारी जान को खतरा हो सकता है।
अब 'न्यूक्लियर-ब्लास्ट' वाली जगह यहां से ज्यादा दूर नहीं होगी!
डॉल्फिन तुरंत वापस घूम गई।
और ध्रुव तथा पीटर ने अपनी यात्रा जारी रखी।
यहां पर रेडिएशन की मात्रा बहुत ज्यादा हो गई है! शुक्र है कि हमने पहले से ही 'एंटी रेडिएशन-सूट' पहन रखे हैं!
ध्रुव! वह देखो।
मूंगे की दीवार में एक बड़ा छेद!
इसके अगल-बगल कुछ यंत्र और तारों के गले टुकड़े भी हैं!
मुझे पूरा यकीन है कि यही 'न्यूक्लियर-ब्लास्ट वाली जगह है! अब यहां से कोई ऐसा सबूत...
गुड गॉड!!
क्या हुआ, पीटर?
देखो! इस छेद के पार!
वा SSS!
ध्रुव के दिमाग से सारी परेशानी एकाएक गायब हो गई।
क्योंकि उसकी आंखों के सामने एक ऐसा अद्भुत दृश्य था -
जिसको आज तक किसी ने भी नहीं देखा था।
यह क्या है ध्रुव?
पता नहीं, पीटर! लेकिन लगता है, कि हम लोगों ने कोई बहुत अद्भुत चीज ढूंढ़ निकाली है!
हमको अंदर चलकर देखना चाहिए, कि आखिर यह क्या है? सच या नजरों का धोखा!
बाद में, पीटर! अभी नहीं!
किसी भी चीज को अच्छी तरह से समझ-बूझ कर ही आगे कदम बढ़ाना चाहिए!
वैसे भी हमारा मुख्य काम अभी इस ब्लास्ट की छान...
अक्!
पीटर की आवाज सुनकर ध्रुव पलटा। -

लेकिन कुछ बोल नहीं पाया, क्योंकि अगले ही पल उसका पाइप भी एक जकड़न में कस चुका था –
मास्टर का ख्याल सही था। कुछ जासूस हमारी तलाश में यहां तक पहुंच गए हैं!...
लेकिन ये यहां से जिंदा वापस नहीं... आऊ!
ये जरूर उसी कमीने के आदमी होंगे, जिसने इस स्थान पर न्यूक्लियर धमाका किया है!...
...और ये ही मुझे उस के पास तक पहुंचाएंगे!
मॉस्क के कारण, रोबो के आदमी यह नहीं समझ पाए थे कि उनका मुकाबला साधारण जासूसों से नहीं...
...बल्कि ध्रुव और कमांडो पीटर से है –
मुकाबला बहुत मामूली और छोटा सा हो सकता था।
अगर उसी वक्त, रोबो के कुछ और आदमी वहां पर न पहुंच जाते –
एकाएक दुश्मनों की संख्या कई गुना बढ़ गई।
आऽऽ! अब तो बगैर किसी मदद के इनसे जीतना मुश्किल है! पर मदद आएगी कहां से?
यहां तो किसी को भी नहीं मालूम है, कि हम कहां...!
लेकिन तभी ध्रुव की सोच को गलत साबित करती हुई मदद आ पहुंची –
डाल्फिन!
डॉल्फिन का हमला अप्रत्याशित और जोरदार था।
और पानी के अंदर एक डॉल्फिन दस आदमियों के बराबर थी।
रोबो के आदमियों के पास अब भागने के अलावा और कोई चारा नहीं था –
भागो!
मैं तो तेरे बोलने के पहले से ही भाग रहा हूं!

वाह दोस्त! आज तो तुमने ही बचाया।
आओ, पीटर! अब वे लोग जल्दी वापस आने की हिम्मत नहीं...
पीटर!
लेकिन पीटर सुनने की हालत में नहीं था। लड़ाई के दौरान रोबो के आदमी, पीटर का मॉस्क नोचने में सफल हो गए थे—
ओह! अब तो पीटर को लेकर तुरंत सतह पर पहुंचना होगा!
लेकिन सतह तक पहुंचते-पहुंचते तो पीटर का दम घुट चुका...
?
तभी ध्रुव के बगल में एक सरसराहट हुई—
और अगले ही पल- ध्रुव, बेहोश पीटर के साथ तेजी से समुद्र की सतह की तरफ बढ़ रहा था।
दूसरी तरफ- चंडिका चुपचाप अपनी तरफ बढ़ती मौत को देख रही थी—
हाहाहा!
अब तुझे मैं ऐसी मौत मारूंगा जिसे देखकर...
...कोई भी मेरा रास्ता रोकने के ख्याल से ही कांप... ओह!
पैरों में तार फंसने से अग्नि-मुख लड़खड़ा कर गिर पड़ा।
और पास ही छुपा बस का ड्राइवर, मौका पाकर तेजी से चंडिका की तरफ लपका—
घबरा मत, बिटिया! हम अभी तोका बचावत हैं।
और उसको उठाकर वह, अग्निमुख से विपरीत दिशा में भागा—
?
और जब तक अग्निमुख तारों की कैद से निकल पाता-

तब तक ड्राइवर, चंड़िका के साथ घनी झाड़ियों में ओझल हो चुका था—
अग्निमुख कुछ पलों तक पीछा करने की सोचता रहा।
और फिर इरादा बदलकर वापस 'एटॉमिक पावर-स्टेशन' की तरफ बढ़ने लगा—
एटॉमिक पावर-प्लांट में हर कोई आने वाले विनाशकारी तूफान से बेखबर था—
हैलो, डॉ॰ राव! क्या बात है? बड़ी खूबसूरत सेक्रेटरी रखी है! भाभी जी को मालूम है या नहीं?
तुम्हारी आदतों की तरह, तुम्हारे ख्याल भी गंदे ही हैं, डॉ॰ पाटिल!
और ये मेरी सेक्रेटरी नहीं, बल्कि एक रिसर्च छात्रा है। मिस नताशा। ये पत्रकारिता का कोर्स कर रही हैं, और इनके रिसर्च का विषय है...
...'भारत और नाभिकीय ऊर्जा'। आश्चर्य की बात तो यह है कि ये पिछले एक साल से हमारे प्लांट में आती-जाती रही...
सर! सर!!
सिक्योरिटी ऑफीसर राघव! अरे, तुम्हारा तो पूरा बदन झुलस गया है! पर कैसे?
सर,...बाहर एक... एक आग उगलता आदमी... आऽऽऽऽऽह!
ओह! यह तो बेहोश ही गया!
लेकिन यह 'आग उगलता आदमी' का क्या मतलब...?
बात पूरी होने से पहले ही डॉ॰ राव को अपनी बात का जवाब मिल गया—
एनर्जी! आहा! यहां से मुझे भरपूर एनर्जी मिलेगी!
कड़ड़ड़ ड़ड़ड़ड़

थोड़ी ही दूरी पर - चंडिका की ताकत धीरे-धीरे वापस आ रही थी-
आह! धन्यवाद!
अगर आज आप खतरा मोल नहीं लेते, तो मैं जिंदा नहीं बचती!
अरे, कैसे मोल नहीं लेते खतरा? तुम तो हमारी बेटी की उम्र की हो, बिटिया!
हम अपनी बिटिया को ऐसे कैसे मरने देते?
वह 'चलता-फिरता ज्वालामुखी' किधर गया, चाचा?
वो, ससुरा उस तरफ गया है। राजापुर बिजली स्टेशन की तरफ! पर तुम काहे खड़ी हो गई?
उसको रोकना बहुत जरूरी है, चाचा! वर्ना वह इस पूरे इलाके को मरघट में बदल देगा!
लेकिन, बिटिया, सुनो तो...!
मेरी चिंता छोड़िए, चाचा! और सब बच्चों को लेकर यहां से, जल्दी से जल्दी निकल जाइए!
उम्मीद है कि इस अफरा-तफरी में ड्राइवर यह ध्यान नहीं देगा, कि श्वेता बच्चों के बीच में नहीं है!
लेकिन 'अग्निमुख' से अकेले निपट पाना मेरे लिए संभव नहीं लगता! इसीलिए मुझे अपने लिए 'स्पेशल मदद' का इंतजाम करना पड़ेगा!...
...अपनी बेल्ट में लगे इस स्पेशल ट्रांसमीटर के जरिए!
चंडिका ने अपने ट्रांसमीटर को ऑन किया-
और उससे एक खास तरह की तरंगें निकलने लगीं।
और कमांडो हैडक्वार्टर में-
यह हमारी 'स्पेशल फ्रीक्वेंसी' पर किसका 'इमर्जेंसी सिग्नल' आ रहा है? ध्रुव का?
नहीं, रेणु! यह सिग्नल 'राजापुर एटॉमिक पावर स्टेशन' के पास से आ रहा है! और ध्रुव ने तो अभी कुछ ही देर पहले पीटर को 'कर्ली सी फेस' पर बुलाया था!
'कर्ली सी फेस' और यह पावर प्लांट तो अलग अलग दिशा में हैं!
फिर यह सिग्नल किसका हो सकता है?
किसी का भी हो, लेकिन उसकी मदद तो करनी ही होगी! पर राजापुर पहुंचते-पहुंचते तो बहुत देर हो जाएगी! और यह 'इमर्जेंसी सिग्नल' है!
देर नहीं होगी, करीम! क्योंकि हमलोग वैन से नहीं...
'स्टार-हेलीकॉप्टर' से जाएंगे!
चलो! फास्ट!! एक पल की भी देर करना ठीक नहीं है!

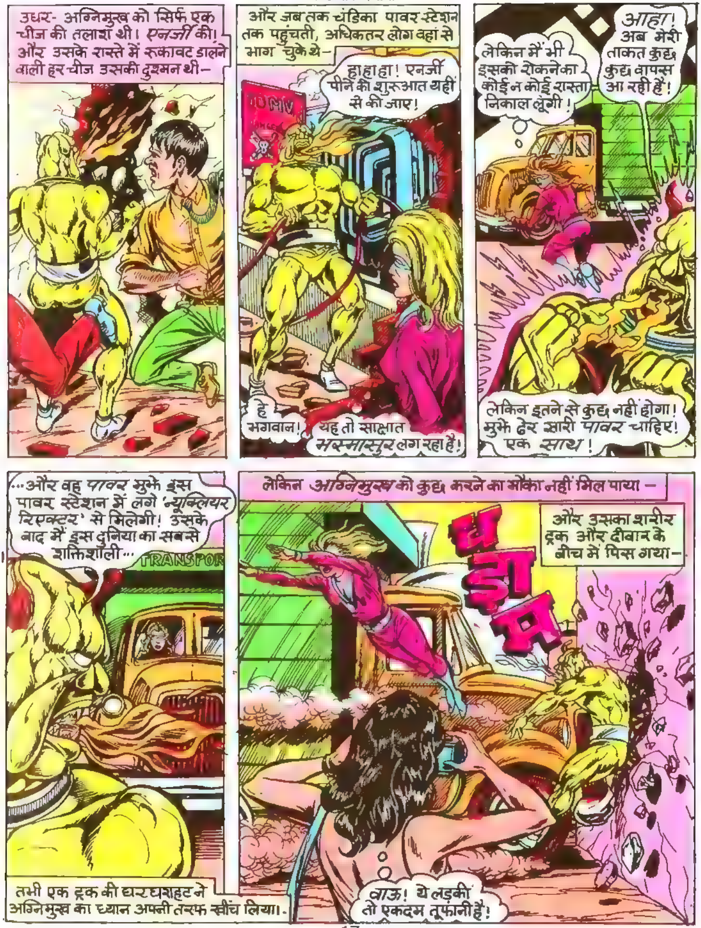
उधर- अग्निमुख को सिर्फ एक चीज की तलाश थी। एनर्जी की। और उसके रास्ते में रुकावट डालने वाली हर चीज उसकी दुश्मन थी-
और जब तक चंडिका पावर स्टेशन तक पहुंचती, अधिकतर लोग वहां से भाग चुके थे-
हा हा हा! एनर्जी पीने की शुरुआत यहीं से की जाए!
हे भगवान!
यह तो साक्षात भस्मासुर लग रहा है!
आहा! अब मेरी ताकत कुछ कुछ वापस आ रही है!
लेकिन मैं भी इसको रोकने का कोई न कोई रास्ता निकाल लूंगी!
लेकिन इतने से कुछ नहीं होगा! मुझे ढेर सारी पावर चाहिए! एक साथ!
...और वह पावर मुझे इस पावर स्टेशन में लगे 'न्यूक्लियर रिएक्टर' से मिलेगी! उसके बाद में इस दुनिया का सबसे शक्तिशाली...
TRANSPOR
तभी एक ट्रक की घरघराहट ने अग्निमुख का ध्यान अपनी तरफ खींच लिया।
लेकिन अग्निमुख को कुछ करने का मौका नहीं मिल पाया -
धड़ाम
और उसका शरीर ट्रक और दीवार के बीच में पिस गया-
वाऊ! ये लड़की तो एकदम तूफानी है!

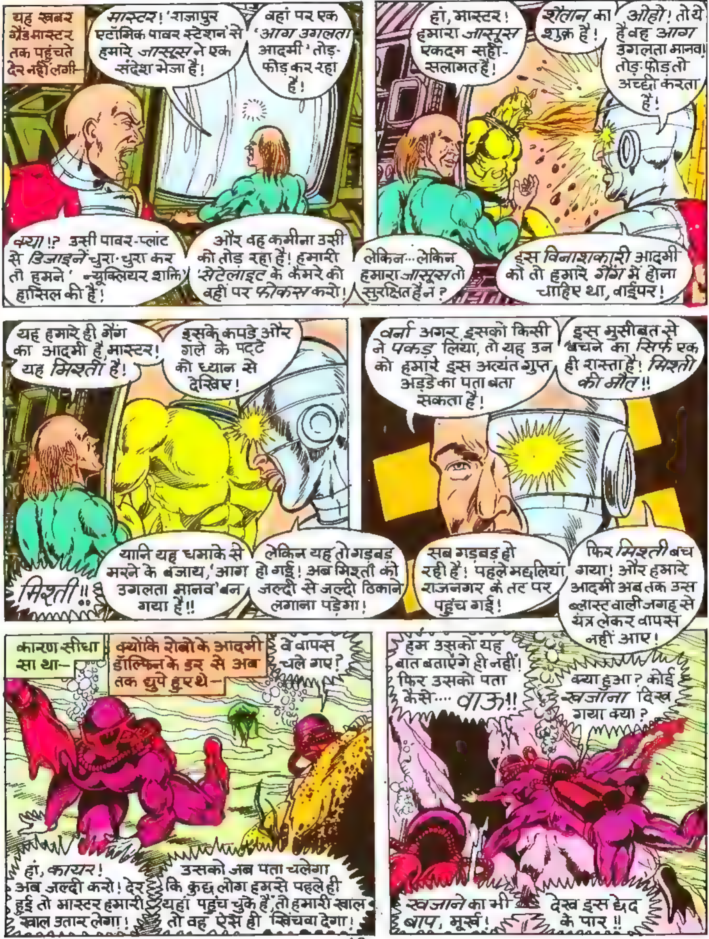

यह खबर ग्रैंडमास्टर तक पहुंचते देर नहीं लगी—
मास्टर! 'राजापुर एटॉमिक पावर स्टेशन' से हमारे जासूस ने एक संदेश भेजा है!
वहां पर एक 'आग उगलता आदमी' तोड़-फोड़ कर रहा है!
क्या!? उसी पावर-प्लांट से डिजाइनें चुरा-चुरा कर तो हमने 'न्यूक्लियर शक्ति' हासिल की है!
और वह कमीना उसी को तोड़ रहा है! हमारी 'सेटेलाइट' के कैमरे को वहीं पर फोकस करो!
हां, मास्टर! हमारा जासूस एकदम सही-सलामत है!
शैतान का शुक्र है!
ओहो! तो ये है वह आग उगलता मानव! तोड़-फोड़ तो अच्छी करता है!
लेकिन... लेकिन हमारा जासूस तो सुरक्षित है न?
इस विनाशकारी आदमी को तो हमारे गैंग में होना चाहिए था, वाईपर!
यह हमारे ही गैंग का आदमी है मास्टर! यह मिश्ती है!
इसके कपड़े और गले के पट्टे को ध्यान से देखिए!
मिश्ती!!
यानि यह धमाके से मरने के बजाय 'आग उगलता मानव' बन गया है!!
लेकिन यह तो गड़बड़ हो गई! अब मिश्ती को जल्दी से जल्दी ठिकाने लगाना पड़ेगा!
वर्ना अगर इसको किसी ने पकड़ लिया, तो यह उन को हमारे इस अत्यंत गुप्त अड्डे का पता बता सकता है!
इस मुसीबत से बचने का सिर्फ एक ही रास्ता है! मिश्ती की मौत!!
सब गड़बड़ हो रही है! पहले मछलियां राजनगर के तट पर पहुंच गईं!
फिर मिश्ती बच गया! और हमारे आदमी अब तक उस ब्लास्ट वाली जगह से यंत्र लेकर वापस नहीं आए!
कारण सीधा सा था—
क्योंकि रोबो के आदमी डॉल्फिन के डर से अब तक छुपे हुए थे—
वे वापस चले गए?
हां, कायर! अब जल्दी करो! देर हुई तो मास्टर हमारी खाल उतार लेगा!
उसको जब पता चलेगा कि कुछ लोग हमसे पहले ही यहां पहुंच चुके हैं, तो हमारी खाल तो वह ऐसे ही खिंचवा देगा!
हम उसको यह बात बताएंगे ही नहीं! फिर उसको पता कैसे.... वाऊ!!
क्या हुआ? कोई खजाना दिख गया क्या?
खजाने का भी बाप, मूर्ख!
देख इस छेद के पार!!

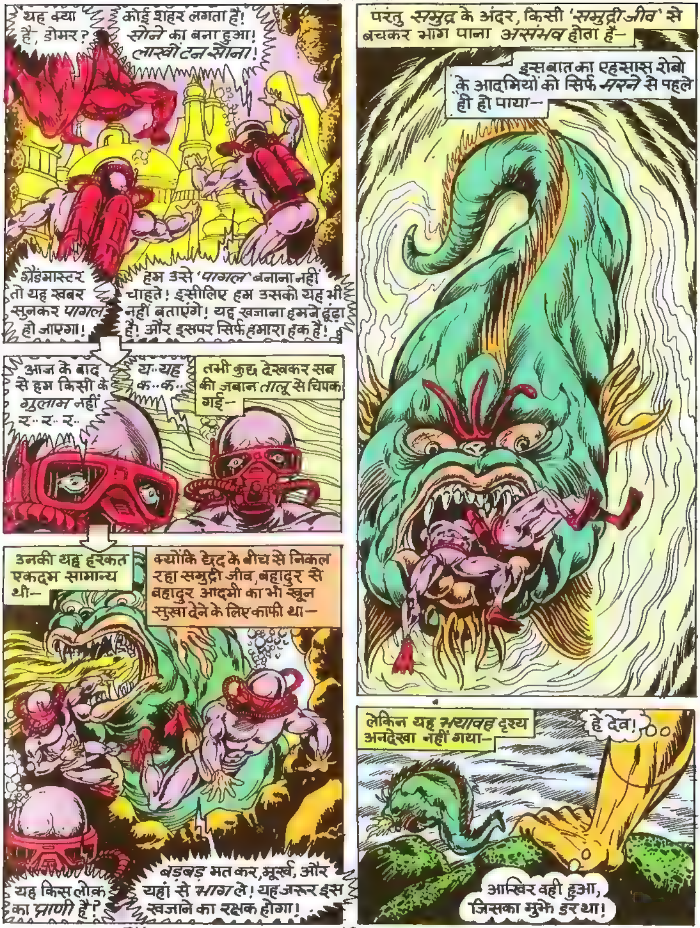
यह क्या है, डोमर?
कोई शहर लगता है! सोने का बना हुआ! लाखों टन सोना!
ग्रेंडमास्टर तो यह खबर सुनकर पागल हो जाएगा!
हम उसे 'पागल' बनाना नहीं चाहते! इसीलिए हम उसको यह भी नहीं बताएंगे! यह खजाना हमने ढूंढ़ा है! और इसपर सिर्फ हमारा हक है!
आज के बाद से हम किसी के गुलाम नहीं र..र..र..
य..यह क..क..
तभी कुछ देखकर सब की जबान तालू से चिपक गई—
उनकी यह हरकत एकदम सामान्य थी—
क्योंकि दरार के बीच से निकल रहा समुद्री जीव, बहादुर से बहादुर आदमी का भी खून सुखा देने के लिए काफी था—
यह किस लोक का प्राणी है?
बड़बड़ मत कर, मूर्ख, और यहां से भाग ले! यह जरूर इस खजाने का रक्षक होगा!
परंतु समुद्र के अंदर, किसी 'समुद्री जीव' से बचकर भाग पाना असंभव होता है—
इस बात का एहसास रोबो के आदमियों को सिर्फ मरने से पहले ही हो पाया—
लेकिन यह भयावह दृश्य अनदेखा नहीं गया—
हे देव!
आखिर वही हुआ, जिसका मुझे डर था!

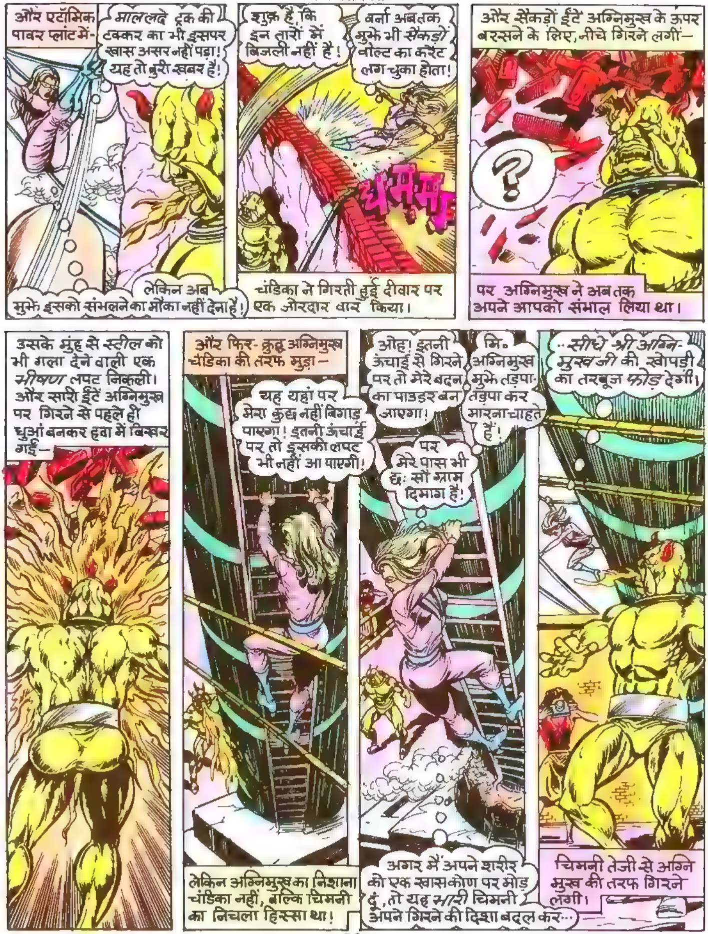
और एटॉमिक पावर प्लांट में-
माललदे ट्रक की टक्कर का भी इसपर खास असर नहीं पड़ा! यह तो बुरी खबर है!
लेकिन अब मुझे इसको संभलने का मौका नहीं देना है!
शुक्र है कि इन तारों में बिजली नहीं है!
वर्ना अब तक मुझे भी सैंकड़ों वोल्ट का करेंट लग चुका होता!
धमम्म
चंडिका ने गिरती हुई दीवार पर एक ओरदार वार किया।
और सैंकड़ों ईंटें अग्निमुख के ऊपर बरसने के लिए, नीचे गिरने लगीं—
?
पर अग्निमुख ने अब तक अपने आपको संभाल लिया था।
उसके मुंह से स्टील को भी गला देने वाली एक भीषण लपट निकली। और सारी ईंटें अग्निमुख पर गिरने से पहले ही धुआं बनकर हवा में बिखर गईं—
और फिर- क्रुद्ध अग्निमुख चंडिका की तरफ मुड़ा—
यह यहां पर मेरा कुछ नहीं बिगाड़ पाएगा! इतनी ऊंचाई पर तो इसकी लपट भी नहीं आ पाएगी!
लेकिन अग्निमुख का निशाना चंडिका नहीं, बल्कि चिमनी का निचला हिस्सा था!
ओह! इतनी ऊंचाई से गिरने पर तो मेरे बदन का पाउडर बन जाएगा!
मि० अग्निमुख मुझे तड़पा-तड़पा कर मारना चाहते हैं!
पर मेरे पास भी छः सौ ग्राम दिमाग है!
अगर मैं अपने शरीर को एक खास कोण पर मोड़ दूं, तो यह भारी चिमनी अपने गिरने की दिशा बदल कर...
..सीधे श्री अग्नि-मुख जी की खोपड़ी का तरबूज फोड़ देगी।
चिमनी तेजी से अग्नि मुख की तरफ गिरने लगी।

और इतनी बड़ी चिमनी को गिरने से पहले भस्म कर देना असंभव था–
लेकिन चंडिका ने गिरती चिमनी और अग्निमुख के बीच में तने तार पर ध्यान नहीं दिया था–
तार से टकरा कर...
नताशा का ध्यान जब तक अपने ऊपर गिरते खतरे पर जाता, तब तक बहुत देर हो चुकी थी।
अब न तो भागने का रास्ता था, और न ही बचने की कोई जगह!
वह भय से जड़ हो गई।
उसको तो यह भी नहीं पता चला, कि आखिर वह बच कैसे गई!
...चिमनी ने अपनी दिशा बदल दी।
अरे, अग्निमुख बच गया! पर चिमनी अब उस फोटोग्राफर लड़की पर गिर रही है!... और उसका ध्यान कहीं और है!
इसपर यह आफत मेरी वजह से आई है!...
...इसलिए इसको बचाने की जिम्मेदारी भी मेरी ही है!
तुम ठीक तो हो न, मिस फोटोग्राफर?
ह...हां! मैं...मैं ठीक हूं! लेकिन... मेरा नाम तो नताशा है!
और मेरा नाम चंडिका है, नताशा।
अब तुम जल्दी से जल्दी यहां से निकल जाओ! क्योंकि थोड़ी ही देर में यह जगह नर्क का डुप्लीकेट बनने वाली है!
नताशा चुपचाप चंडिका को खतरे की तरफ बढ़ती देखती रही–
और न जाने क्यों, उसके शर्मिंदा चेहरे पर आंसू बहने लगे–
हे भगवान!
मेरी मदद करो!

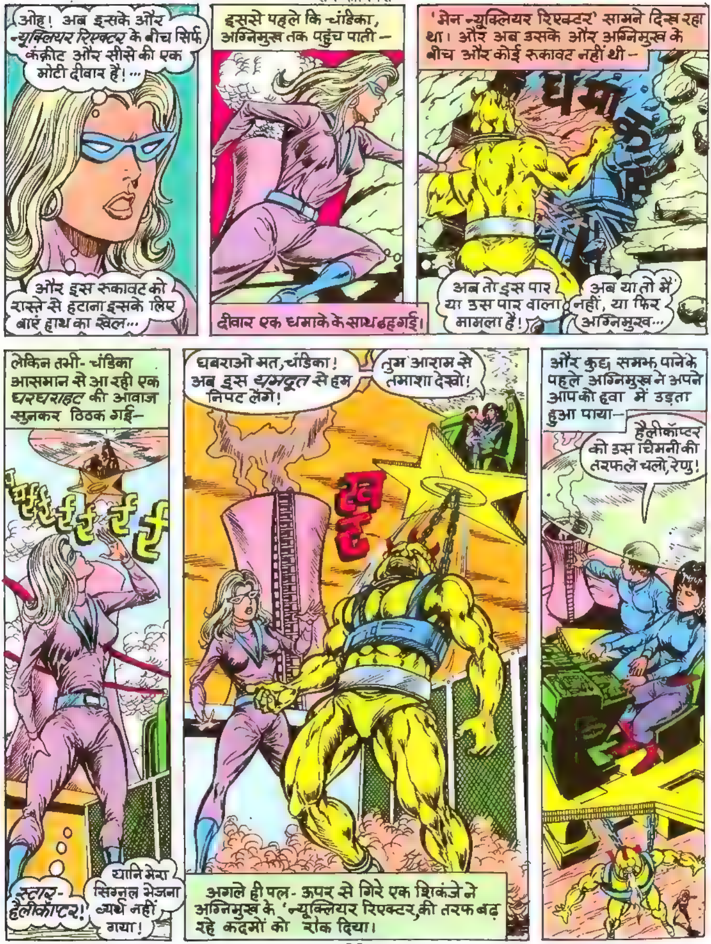

ओह! अब इसके और न्यूक्लियर रिएक्टर के बीच सिर्फ कंक्रीट और सीसे की एक मोटी दीवार है! ...
और इस रुकावट को रास्ते से हटाना इसके लिए बाएं हाथ का खेल...
इससे पहले कि चंडिका, अग्निमुख तक पहुंच पाती —
दीवार एक धमाके के साथ ढह गई।
'मेन न्यूक्लियर रिएक्टर' सामने दिख रहा था। और अब उसके और अग्निमुख के बीच और कोई रुकावट नहीं थी —
धमाके
अब तो इस पार या उस पार वाला मामला है!
अब या तो मैं नहीं, या फिर अग्निमुख...
लेकिन तभी- चंडिका आसमान से आ रही एक घरघराहट की आवाज सुनकर ठिठक गई—
र्र र्र र्र
स्टार-हैलीकॉप्टर!
यानि मेरा सिगनल भेजना व्यर्थ नहीं गया!
घबराओ मत, चंडिका! अब इस यमदूत से हम निपट लेंगे!
तुम आराम से तमाशा देखो!
खट
अगले ही पल- ऊपर से गिरे एक शिकंजे ने अग्निमुख के 'न्यूक्लियर रिएक्टर' की तरफ बढ़ रहे कदमों को रोक दिया।
और कुछ समझ पाने के पहले अग्निमुख ने अपने आप को हवा में उड़ता हुआ पाया—
हैलीकॉप्टर को इस चिमनी की तरफ ले चलो, रेणु!

ताकि एक जोरदार टक्कर से ही इसका भुर्ता बन जाए!
यह तो खैर है कि यह शिकंजा स्पेशल धातु का बना है!
वर्ना यह उसको अब तक गला चुका होता।
धड़ाक
लेकिन शिकंजे से जुड़ी चेन स्पेशल धातु की नहीं बनी थी–
बौखलाए हुए अग्निमुख ने एक ही फुंकार में उसको गला दिया–
लेकिन यह एक जबर्दस्त गलती थी।
क्योंकि अग्निमुख का शरीर, कई फुट ऊपर से लहराता हुआ, नीचे कड़ी जमीन से आ टकराया।
धमममम
यह टक्कर अग्निमुख जैसे प्राणी को भी बेहोश कर देने के लिए काफी थी।
क्या हुआ, नताशा?
डॉ॰ राव! आप अभी तक यहीं हैं?
हां! इस खतरे का आभास पा कर रिएक्टर को बंद करना जरूरी था।
ताकि अगर कोई उससे छेड़खानी करे भी तो नुक्सान ज्यादा न हो!
अब किसी को कोई नुक्सान नहीं होगा, डॉ॰ राव!
हमारा दुश्मन बिल्कुल आराम से सो रहा है!
अब सीधा सा काम, इसको यहां से ले जाकर 'स्पेशल सेल' में कैद करने का...

आऽऽऽऽऽऽ!!
लेकिन अग्निमुख में अभी काफी जान बाकी थी।
अब चंडिका एक बार फिर मौत की गिरफ्त में थी...
करीम और रेणु असहाय से देखने के अलावा और कुछ नहीं कर सकते थे।
अब क्रोधित अग्निमुख से चंडिका को बचाना असंभव लगता था...
--कि तभी- सधे कदमों से आगे बढ़ती हुई नताशा दोनों के बीच में आ खड़ी हुई।
अग्निमुख ने नताशा को गौर से देखा। और उस के चेहरे पर आश्चर्य के भाव उभर आए--
वह कुछ पलों तक दुविधा में रहा।
और फिर- 'मेन न्यूक्लियर रिएक्टर' की तरफ बढ़ चला--
आश्चर्य है, करीम! इसने उस लड़की पर हमला नहीं किया!!
अब अग्निमुख को हमें ही रोकना होगा! तुम प्लेटफार्म को नीचे करो; और मैं इसकी इहलीला समाप्त करता हूं!
अगले ही पल- हेलीकॉप्टर से एक प्लेटफॉर्म, झूलता हुआ नीचे की ओर बढ़ने लगा --
और साथ ही साथ वातावरण गोलियों की तड़तड़ाहट से गूंज उठा।
तड़ तड़ तड़
लेकिन सारी गोलियां अग्निमुख के शरीर से टकरा कर भस्म होती गईं।
अग्निमुख ने पीछे मुड़कर देखने की भी जरूरत नहीं समझी।
लेकिन अब तक नताशा, चंडिका और डॉ॰ राव के साथ प्लेटफॉर्म पर पहुंच चुकी थी--
हेलीकॉप्टर उड़ाओ! जल्दी!

स्थिति की नाजुकता को समझते हुए, रेणु ने नताशा की बात मानने में कोई बुराई नहीं समझी—
अग्निमुख को रोक पाना अब संभव नहीं लगता था।
वैसे भी अग्निमुख अब न्यूक्लियर रिएक्टर के अंदर पहुंच चुका था—
और इससे पहले कि हैलीकाप्टर सुरक्षित दूरी पर पहुंच पाता—
एक भीषण और बहरा कर देने वाला धमाका हुआ—
कंक्रीट और लोहे के भारी टुकड़े सैकड़ों फीट ऊपर हवा में उछल गए।
एक लोहे का टुकड़ा गोली की तरह हैलीकॉप्टर से टकराया।
और स्टार-हैलीकॉप्टर पर कटे पक्षी की तरह घने पेड़ों की तरफ गिरने लगा—
अब कुछ चैन पड़ा!
लेकिन अभी मुझे और एनर्जी चाहिए! इस दुनिया की सारी एनर्जी!!
इसी दौरान- ध्रुव, बेहोश पीटर के साथ राजनगर के तट की ओर बढ़ रहा था—
पीटर अब तक होश में नहीं आया है!
इसको जल्दी से जल्दी अस्पताल पहुंचाना बहुत जरूरी है!
उसके बाद में अकेला वापस आकर छानबीन...!
तभी दाहिनी तरफ का आसमान पलभर के लिए रोशनी से दमक उठा—
यह क्या हुआ?
विस्फोट?
कुछ पलों बाद- चमक का पीछा करते हुए एक गड़-गड़ाहट ने पूरे वातावरण को भर दिया—
यह विस्फोट की आवाज राजापुर से आई है!
लेकिन ध्रुव के लिए खतरा राजापुर से नहीं...

...बल्कि समुद्र के अंदर से उभर रहा था—
अपने सामने एकाएक प्रकट हुए भयंकर समुद्री जीव को देखकर, ध्रुव भी एक पल के लिए स्तब्ध रह गया—
?
लेकिन सिर्फ एक पल के लिए—
यह जो भी है, इससे इस वक्त उलझना ठीक नहीं है! क्योंकि पीटर को जल्दी से जल्दी अस्पताल पहुंचाना बहुत जरूरी है!
मोटर बोट तेजी से नब्बे डिग्री के कोण पर तेजी से घूमी—
और उस भयंकर जीव के रास्ते से दूर बढ़ने लगी—
!
फ स्स स
लेकिन मोटरबोट ज्यादा दूर नहीं जा पाई।
ध्रुव ने निर्णय लेने में एक पल भी नहीं लिया—
इससे बच कर भागना बेकार है! इस से मुकाबला करना ही पड़ेगा!
और इसके लिए सबसे पहले इस का ध्यान अपनी तरफ खींचना पड़ेगा!
वर्ना अगर इसने मोटरबोट पर हमला किया, तो बेहोश पीटर को बचाना मुश्किल हो जाएगा!
हालांकि मैं किसी जीव को मारने के खिलाफ हूं!
लेकिन यह प्राणी शर्तिया उन जीवों की श्रेणी में नहीं आता!
ओफ़!
यह तो मुझे पका कर खाने के मूड में है!!

इसकी आग से बचने के लिए, अब यह लड़ाई पानी के अंदर लड़नी होगी!
जहां पर इसके मुंह की आग शायद ज्यादा दूर तक नहीं जा पाएगी!
दैत्य ने ध्रुव का पीछा नहीं छोड़ा—
मेरा ख्याल सही था!
इसके मुंह की आग अब मुंह में ही रह जा रही है!
अब एकदम सही मौके का इंतजार करना है!...
दैत्य तीर की तरह ध्रुव की तरफ बढ़ा...
...और उसी पल ध्रुव ऊपर उछला—
साथ ही साथ उसका हाथ घूमा, और एक नुकीला भाला सीधा दैत्य के मुंह में जा घुसा—
यह भाला इसकी आंतों और गले को चीर कर रख देगा! और यह राम नाम सत्य...!
लेकिन दैत्य के मुंह की भीषण आग ने भाले को गले तक पहुंचने से पहले ही गला दिया—
अब ध्रुव के हाथ खाली थे—
और उसकी तरफ बढ़ती मौत की गति बहुत तेज! एक बार फिर ध्रुव ने अपनी तरफ बढ़ते हुए विशाल जबड़ों से अपने को बचाया—
लेकिन लहराती पूंछ ने उसको अपना निशाना बना ही लिया।

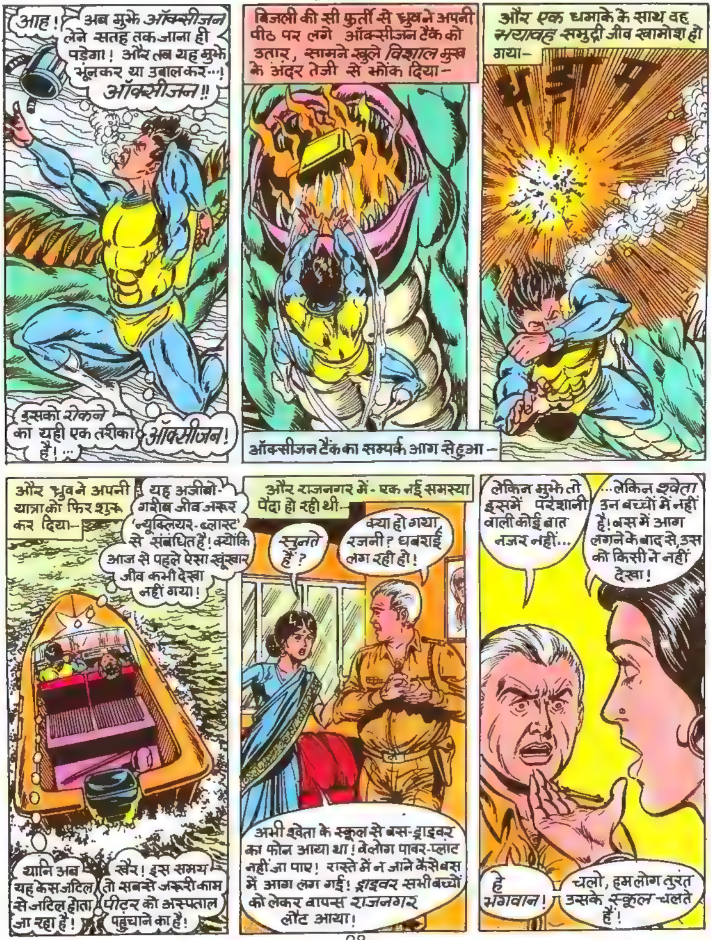
आह!
अब मुझे ऑक्सीजन लेने सतह तक जाना ही पड़ेगा! और तब यह मुझे भूनकर या उबालकर...! ऑक्सीजन!!
इसको रोकने का यही एक तरीका है! ...
ऑक्सीजन!
बिजली की सी फुर्ती से ध्रुव ने अपनी पीठ पर लगे ऑक्सीजन टैंक को उतार, सामने खुले विशाल मुख के अंदर तेजी से झोंक दिया–
ऑक्सीजन टैंक का सम्पर्क आग से हुआ–
और एक धमाके के साथ वह भयावह समुद्री जीव खामोश हो गया–
और ध्रुव ने अपनी यात्रा को फिर शुरू कर दिया–
यह अजीबो-गरीब जीव जरूर 'न्यूक्लियर-ब्लास्ट' से संबंधित है! क्योंकि आज से पहले ऐसा खूंखार जीव कभी देखा नहीं गया!
यानि अब यह केस जटिल से जटिल होता जा रहा है!
खैर! इस समय तो सबसे जरूरी काम पीटर को अस्पताल पहुंचाने का है!
और राजनगर में - एक नई समस्या पैदा हो रही थी–
सुनते हैं?
क्या हो गया, रजनी? घबराई लग रही हो!
अभी श्वेता के स्कूल से बस-ड्राइवर का फोन आया था! वे लोग पावर-प्लांट नहीं आ पाए! रास्ते में न जाने कैसे बस में आग लग गई! ड्राइवर सभी बच्चों को लेकर वापस राजनगर लौट आया!
लेकिन मुझे तो इसमें परेशानी वाली कोई बात नजर नहीं...
...लेकिन श्वेता उन बच्चों में नहीं है! बस में आग लगने के बाद से, उस को किसी ने नहीं देखा!
हे भगवान!
चलो, हम लोग तुरंत उसके स्कूल चलते हैं!

राजन और रजनी कार की तरफ लपके-लेकिन तभी-
इमेर्जेंसी, सर! राजापुर एटॉमिक पावर प्लांट को एक आग उगलते आदमी ने तबाह कर दिया है!
आप तुरंत हैडक्वार्टर पहुंचिए!
ओह! मुझे तुरंत ऑफिस जाना होगा, रजनी!
तुम श्वेता के स्कूल पहुंचो! मैं थोड़ी देर में वहां आता हूं!
हुंह! आप और आपका काम!
बच्चों के अलावा सारी दुनिया की फिक्र है, आपको!
चलो, ड्राइवर!
इस नई घटना से अंजान ध्रुव, पीटर के साथ अस्पताल की तरफ बढ़ रहा था-
और- अग्निमुख और एनर्जी की तलाश में राज नगर आ पहुंचा था-
एनर्जी! कहां है एनर्जी?
चारों तरफ जान बचाने के लिए भगदड़ मच रही थी।
एटॉमिक पावर प्लांट की सारी ऊर्जा पीकर अग्निमुख अत्यंत शक्तिशाली हो गया था-
उसके रास्ते में आने वाली हर वस्तु धूल में मिलती जा रही थी-
उसको सिर्फ एक ही चीज की तलाश थी- एक और बिजलीघर की।
कुछ ही मिनटों में-
सर, वह आग उगलता आदमी राजनगर आ गया है!
व्हाट? इस वक्त वह कहां पर है?
नाना चौक, पर!
उसके बढ़ने के हर रास्ते पर रुकावटें खड़ी करवा दो!
मैं भी खुद नाना चौक पहुंचता हूं!
और अस्पताल में-
घबराओ मत, ध्रुव! अब पीटर खतरे के बाहर है! एक दो दिनों में यह बिलकुल नार्मल हो...
ये 'हॉस्पिटल एरिया' में कौन हॉर्न बजा रहा है?
ओ, माई गॉड!

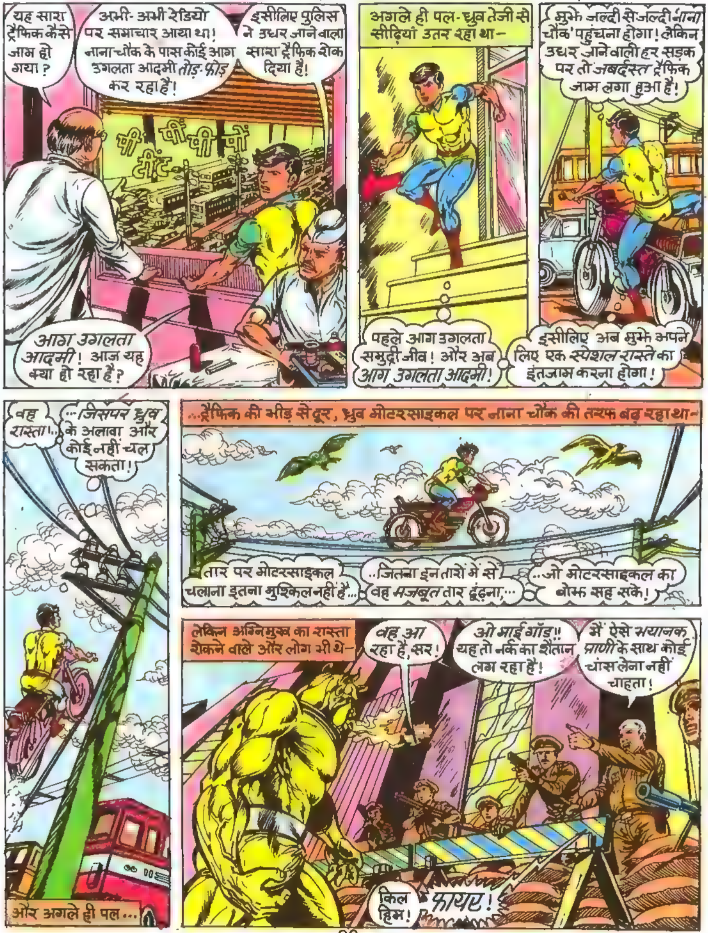

यह सारा ट्रैफिक कैसे जाम हो गया?
अभी-अभी रेडियो पर समाचार आया था! नाना चौक के पास कोई आग उगलता आदमी तोड़-फोड़ कर रहा है!
इसीलिए पुलिस ने उधर जाने वाला सारा ट्रैफिक रोक दिया है!
पीं पीं पीं पों टींट
आग उगलता आदमी! आज यह क्या हो रहा है?
अगले ही पल- ध्रुव तेजी से सीढ़ियां उतर रहा था-
पहले आग उगलता समुद्री जीव! और अब आग उगलता आदमी!
मुझे जल्दी से जल्दी 'नाना चौक' पहुंचना होगा! लेकिन उधर जाने वाली हर सड़क पर तो जबर्दस्त ट्रैफिक जाम लगा हुआ है!
इसीलिए अब मुझे अपने लिए एक स्पेशल रास्ते का इंतजाम करना होगा!
वह रास्ता!...
...जिसपर ध्रुव के अलावा और कोई नहीं चल सकता!
और अगले ही पल...
...ट्रैफिक की भीड़ से दूर, ध्रुव मोटरसाइकल पर नाना चौक की तरफ बढ़ रहा था-
तार पर मोटरसाइकल चलाना इतना मुश्किल नहीं है...
..जितना इन तारों में से वह मजबूत तार ढूंढना,...
..जो मोटरसाइकल का बोझ सह सके!
लेकिन अग्निमुख का रास्ता रोकने वाले और लोग भी थे-
वह आ रहा है, सर!
ओ माई गॉड!! यह तो नर्क का शैतान लग रहा है!
मैं ऐसे भयानक प्राणी के साथ कोई चांस लेना नहीं चाहता!
किल हिम!
फायर!

अगले ही पल- कई रायफलें एक साथ गरज उठीं।
और कई गोलियां बरबाद हो गईं।
यह तो बढ़ता ही आ रहा है!!
हमारी गोलियां इसपर बेअसर हो रही हैं, सर!
अग्निमुख, बगैर एक भी कदम रुके बाधा को पार कर गया–
ओफ्! ये मच्छर बहुत तंग करते हैं!
देखकर भी यकीन नहीं होता!
यह खूंखार प्राणी तो एकदम चलती-फिरती भट्ठी है!
इसको यहीं पर रोकना होगा!
वर्ना यह इस खूबसूरत शहर को खंडहर बना देगा!
आऊ!
आई॰जी॰ राजन ने बगैर शत्रु की ताकत जाने, उसपर हमला किया था...
...और यह एक जानलेवा गलती थी–
तूने मुझपर हमला किया? अग्निमुख पर!
यानि अब तेरी लाइफ का दि एंड आ गया!
असावधान राजन अपने आपको पूरी तरह से बचा नहीं सके।
तूने इसी से मुझपर हमला किया था न?
अब मैं इसी से तेरी खोपड़ी तोडूंगा!
अग्नि मुख का हाथ हवा में उठा...
...और उठा ही रह गया।
तो यह 'मि॰ अग्निमुख' हैं! पट्ठे ने अपना नाम तो जोरदार रखा है! देखने से भी यह उसी समुद्री प्राणी का भाई-भतीजा लग रहा है!
यानि इसको भी किसी ऐसी जगह ले जाकर मारना पड़ेगा...
जहां पानी मिले!

और यहां पर पानी का सबसे बढ़िया स्रोत है, यह फायर-ब्रिगेड का 'वाटर पंप'!
लेकिन इसको खोलने की मेहनत तो मैं अग्निमुख से ही करवाऊंगा!
ध्रुव का ख्याल सही था–
गुस्से से भरा अग्निमुख उसकी तरफ पलटा–
और एक ही फुंकार में पम्प गल गया।
अब पंप से निकलती तेज और मोटी धारा की सिर्फ दिशा की जरूरत थी–
और देखते देखते वातावरण भाप से भर गया।
लेकिन ध्रुव ने अग्निमुख की शक्ति का गलत अंदाजा लगाया था–
तू मेरी बहुत एनर्जी खत्म करवा रहा है, छोकरे!
अपनी मौत को बुलावा मत दे!
यह बेशर्म चुल्लू भर पानी में डूब-मरने वालों में से नहीं है!
इसको मरने के लिए और ज्यादा पानी चाहिए!
पॉप
ध्रुव के मजबूत हाथों ने एक झटके से ही मेनहोल का भारी ढक्कन उखाड़ लिया।
और पलक झपकते उसका शरीर हवा में उड़ता हुआ अग्निमुख के पीछे जा पहुंचा–
अगले ही पल उसका हाथ घूमा, और अग्निमुख एक भारी टक्कर खाकर, सीधे खुले मेनहोल में जा गिरा–
ध्रुव की योजना सफल हो गई थी–
वह आगे लपका। और मेनहोल का ढक्कन वापस अपनी जगह पर फिट हो गया
इस शहर के सीवरों में इतना पानी और इतनी जहरीली गैसें हैं, कि इसका बच कर बाहर आना असंभव है!

अब सबसे जरूरी काम पापा को सुरक्षित जगह पर पहुंचाने का है!
और उसके बाद अग्निमुख को पकड़ने के लिए 'स्पेशल पुलिस फोर्स' से संपर्क करना होगा।
ताकि वे जल्दी से जल्दी यहां पहुंचकर अग्निमुख को हिरासत में...
लेकिन तभी - सैंकड़ों प्रेशर कुकर एक साथ फटने जैसी भयंकर आवाज़ ने...
...ध्रुव को, आई० जी० राजन को वहीं पर छोड़ने के लिए विवश कर दिया।
मेनहोल के अंदर बनी भाप ने अपने जबर्दस्त प्रेशर से मेनहोल के भारी ढक्कन को हवा में पत्ते की तरह उड़ा दिया था-
यह तो वाकई बहुत शक्तिशाली है! यह मेरी हर स्कीम को फेल करता जा रहा है!...
और मेरे पास इसको पकड़ने के रास्ते खत्म हो रहे हैं!
हाहाहा! बचो, और बचो सुपर कमांडो, ध्रुव!
लेकिन अब तुम को अग्निमुख, यमराज के हवाले कर के ही रहेगा!
हमारा एजेंट 'राजापुर एटॉमिक प्लांट' से वापस आ गया है, मास्टर!
पर क्यों?
उसको तो अभी वापस नहीं आना था!
तू समझता था कि तू मुझे पकड़ पाएगा?
अब मैं बिना तुझे खत्म किए आगे नहीं बढ़ूंगा!
खैर! उसे आराम करने दो। और ध्यान रहे, कि कोई उसके आराम में खलल न डाले!
हमारे आदमी अभी 'ब्लास्ट' वाली जगह से यंत्र लेकर वापस लौटे या नहीं?
नहीं, मास्टर! और वे कोई जवाब भी नहीं दे रहे हैं!
क्या!? तुरंत चेक करो!
कहीं कोई गड़बड़ तो नहीं है?

अगले ही पल- स्क्रीन पर जो दृश्य उभरा, उसे देखकर रोबो सबकुछ भूल गया—
शैतान की कसम! यह तो… यह तो सोने का शहर है, वाईपर!
आज तक इस मूंगे की चट्टान ने इसको दुनिया की नजरों से छिपाकर रखा था!
और इस बीच हम छोटे-मोटे कामों में अपना समय खराब कर रहे थे!
इतना सारा खालिस सोना! लाखों लाख टन!
वाईपर! तुरंत हमारी पूरी अटैक फोर्स को तैयार करो!
हमको तुरंत इस 'स्वर्ण नगरी' पर कब्जा करना है!
किसी भी कीमत पर!
किसी भी कीमत पर!
और टूटे फूटे राजापुर एटॉमिक प्लांट के पास- करीम, रेणु और चंडिका को लगभग एकसाथ ही होश आया—
आह! नीली छतरी वाले की कृपा से हम लोग घनी झाड़ियों पर ही गिरे! वर्ना हम लोगों के शरीर का…
अरे! नताशा और डॉ० राव कहां गए?
उनको होश आ गया होगा! और वे चले गए!
किसी डॉक्टर ने यह थोड़े ही कहा है कि सबके होश में आने का इंतजार कीजिए, और फिर जाइए!
अब यहां खड़े रहना बेकार है! पावर प्लांट में बहुत सारे लोग गाड़ियां छोड़ कर भागे हैं! वहीं से कोई गाड़ी लेकर वापस राजनगर चला जाए!
क्यों, चंडिका?
चंडिका!
फिर चली गई!
इसका नाम तो गिनीस बुक और वर्ल्ड रिकॉर्ड्स में होना चाहिए!
रेणु, मेरा हाथ पकड़ लो!
आजकल बहुत लोग गुम हो रहे हैं!

और थोड़ी ही देर बाद— करीम और रेणु एक टूटी-पिचकी कार में राजनगर की तरफ बढ़ रहे थे—
बेचारे 'स्टार-हेलीकॉप्टर' की किस्मत ही खराब है! जब निकालो, तब उसे कोई तोड़ देता है! ...
पिछली बार अमीकनों ने उसका कबाड़ा कर दिया था, और इस बार ... ☆
रेणु, देखो!
ओह! इस बस का तो बहुत बुरा हाल है! यह भी जरूर अग्निमुख का ही काम होगा!
तभी - करीम को तेजी से ब्रेक मारना पड़ा। क्योंकि रास्ते में एकाएक एक भयभीत आकृति, कार को रुकवा रही थी—
श्वेता !!
श्वेता, तुम यहां पर क्या रही हो?
एक.. एक आग उगलते आदमी ने (सुबक) हमारी स्कूल बस... ..जला दी! मैं बेहोश हो गई!
जब मुझे (सुबक) ... होश आया... तो बाकी लोग मुझे छोड़कर जा चुके थे! .. ऊं ऊं ऊं.. सुड़क!
बस! बस!! अब चुप हो जाओ!
हम सबसे पहले तुमको लेकर स्कूल चलते हैं!
और उन्हें इंफार्म करके हम लोग सीधे घर चलेंगे! ओ.के.?
(सुड़क) ओ.के.!
मैं भी पहले मम्मी-पापा की चिंता दूर कर दूं! और उसके बाद फिर अग्निमुख की खोज में निकलूंगी!
बेचारी मम्मी का तो बुरा हाल हो गया होगा! क्योंकि ड्राइवर को अब तक पता लग ही गया होगा, कि मैं उसके साथ नहीं हूं! और फिर उसने घर में फोन जरूर किया होगा!
लेकिन श्वेता को अगर ध्रुव के बारे में पता होता, तो वह ऐसी गलती कभी नहीं करती—
क्योंकि ध्रुव को इस समय मदद की सख्त जरूरत थी—
ओह! अब अगर इसको रोकने का जल्दी ही कोई रास्ता न मिला, तो मैं ज्यादा देर तक बच नहीं पाऊंगा!
अगर मैं किसी तरह से इसके मुंह के अंदर धमाका कर पाता, तो काम हो जाता! ...

☆ : पढ़िए 'मौत का ओलंपिक'

ध्रुव की मौत का तमाशा देखने के लिए ग्रैंड मास्टर रोबो का 'किलर-स्क्वायड' भी अब तक घटनास्थल तक आ पहुंचा था—
आज अपने सितारे बुलंद हैं, समद! हम तो सिर्फ मिश्ती को खत्म करने आए थे!
लेकिन यहां पर तो हमारे दो जानी दुश्मन एक साथ मौजूद हैं!
मिश्ती उर्फ अग्निमुख, और सुपर कमांडो ध्रुव!
जल्दी से हैंड ग्रेनेड निकाल!
एक शक्तिशाली हथगोला एकसाथ दो जानें लेने के लिए हवा में उछला—
ये चला इन दोनों की मौत का फर्मान!
और ध्रुव की नज़र जब तक गोले पर पड़ती, तब तक गोले और ध्रुव के बीच की दूरी कुछ फीट की रह गई थी—
बचने का कोई रास्ता नहीं था!
रास्ता था - तो सिर्फ सामना करने का—
अब ये नई मुसीबत कहां से आ गई?
लेकिन, यह मुसीबत भेजने वाले ये नहीं जानते, कि इस वक्त ये हथगोला मेरे लिए मौत नहीं, वरदान है!
क्योंकि अब ये हथगोला अग्निमुख को उसी तरह से खत्म कर देगा, जैसे उस समुद्री जीव को ऑक्सीजन टैंक ने खत्म कर दिया था!
बिजली की सी फुर्ती से ध्रुव ने हथगोले को अग्निमुख के खुले मुंह की तरफ उछाल दिया।
लेकिन अग्निमुख के सिर की धज्जियां उड़ा देने के लिए आगे बढ़ता गोला...
...हवा में ही रुक गया!
?
ध्रुव इस आश्चर्य का कारण जानने के लिए घूमा, और उसकी आंखें फैलती चली गईं—

हवा में बने एक द्वार से निकल रहा, सोने की पोशाक पहने मानव किसी कोण से इस धरती का नहीं लग रहा था। उसकी हथगोले को हवा में रोक देने की अद्भुत शक्ति भी इस बात की पुष्टि करती थी—
लेकिन अग्निमुख साफ तौर से इस अद्भुत मानव को जानता था।
ओह! एक और नई घटना? मेरा तो सिर घूम रहा है!
तु..तुम? तुम!
तुम यहां पर भी आ पहुंचे?
यह...यह नहीं हो सकता!! नहीं हो सकता!!
मैं तुमको ले जाने आया हूं, अग्निमुख! तुम जानते हो कि हम तुमको जाने नहीं दे सकते!
नहीं! अब तुम मुझे नहीं ले जा सकते!
अब मुझे कोई भी बांध कर नहीं रख सकता!
तुम जानते हो कि तुम्हारी ये बचकानी हरकतें मुझपर बेअसर हैं! और तुम को तो मैं अपने साथ ले ही जाऊंगा।
चाहे तुम अपनी मर्जी से चलो, या मेरी मर्जी से!
यह क्या हो रहा है, कार्लो? यह आदमी तो नौटंकी से भागा हुआ लगता है!
कुछ भी कहो, आदमी खतरनाक लगता है! और यह हमारा काम खुद ही कर रहा है!
अभी चुपचाप देखते रहो! अगर कोई गड़बड़ हुई, तब हम अपनी ताकत दिखाएंगे! समझे?
उधर अग्निमुख बौखला कर, अपनी पूरी ताकत से वार करने की कोशिश कर रहा था—
अपनी शक्ति व्यर्थ मत करो!
तुम्हारी ऊर्जा, मेरे स्वर्ण-पाश से आगे नहीं बढ़ सकती, अग्निमुख!
अब तुम शांतिपूर्वक मेरे साथ चलो!
समझ में ही नहीं आ रहा है कि यह स्वर्ण मानव दोस्त है या दुश्मन! पर इतना तो साफ है कि यह अग्निमुख को साथ ले जाना चाहता है!
और मैं इसकी इजाजत नहीं दे सकता!

ठहरो!
तुम अग्निमुख को यहां से नहीं ले जा सकते!
मैं कुछ भी कर सकता हूं, बालक!
और तुमको रोकना मेरे लिए एक मामूली काम है!
जरूर होगा! अगर तुम्हारा वार मुझपर लग सके तो जरूर होगा!
कड़ड
ड़ड़
लेकिन मैं तुमको इसका मौका नहीं दूंगा!
तो तुम मुझपर शारीरिक शक्ति का प्रयोग कर रहे हो!
हम शारीरिक शक्ति दिखाने के आदी नहीं हैं, बालक!...
लेकिन आवश्यकता पड़ने पर इसका प्रयोग बखूबी कर सकते हैं!
युद्ध बराबरी का होना चाहिए!
स्वर्ण-मानव का हाथ दूर पर ही घूमा...
तड़ाक
आह!
...और ध्रुव उछल कर दूर जा गिरा।
यह तो अद्भुत प्राणी है! यह मुझपर 'दूर-संचालित' वार कर रहा है!
ऐसे 'रिमोट-कंट्रोल' वारों से तो यह मुझको दूर से ही मार-मार कर बेदम कर देगा!
धाड़
और मैं इसका कुछ नहीं कर पाऊंगा! मुकाबला बराबरी का नहीं है!
इसीलिए अब मुझे अपने लिए मदद बुलानी होगी!
चिंचिं चिंचींचीं! चीऽऽच!

अगले ही पल – आकाश में उड़ रही चिड़ियों का एक झुंड तेजी से नीचे उतरा।
अचानक हुए इस हमले से स्वर्ण मानव संभल नहीं पाया–
चीं
चीं
चीं
चीं चां
उसके हाथ में पकड़े स्वर्ण पाश का दूसरा सिरा नीचे जा गिरा।
अब इससे पहले कि यह संभले, मुझे इसको काबू में कर लेना है!
इस मानव को पकड़ने के लिए हमारे हथियार शायद बेकार साबित हों!...
लेकिन इसको, इसके अपने ही हथियार से तो पकड़ा जा ही सकता है!
और इससे पहले कि स्वर्ण-मानव कुछ समझ पाता, वह अपनी ही सुनहरी रस्सी के बंधन में बंध चुका था।
ओह!
लेकिन कुछ लोगों को यह बात पसंद नहीं आई–
बाजी पलट रही है, समद! ध्रुव ने इन दोनों को कैदी बना लिया है!
यानि अब हमको बीच में टांग अड़ानी ही पड़ेगी!
तुम बहुत बुद्धिमान और बलवान हो, बालक! आज मैं पहली बार किसी के हाथों परास्त हुआ हूं!
तारीफ करना छोड़ो, और मुझे अपने बारे में... ओह!
धांय
धांय
धांय
धांय
धांय
तभी गोलियों की एक तेज बौछार ने ध्रुव को दूर हट जाने पर मजबूर कर दिया–
ये वही लोग होंगे जिन्होंने हथगोला फेंका था!
वे लोग उस गली से इधर गोलियां चला रहे हैं!...
और इन गोलियों की बौछार में मैं उन तक नहीं पहुंच सकता!

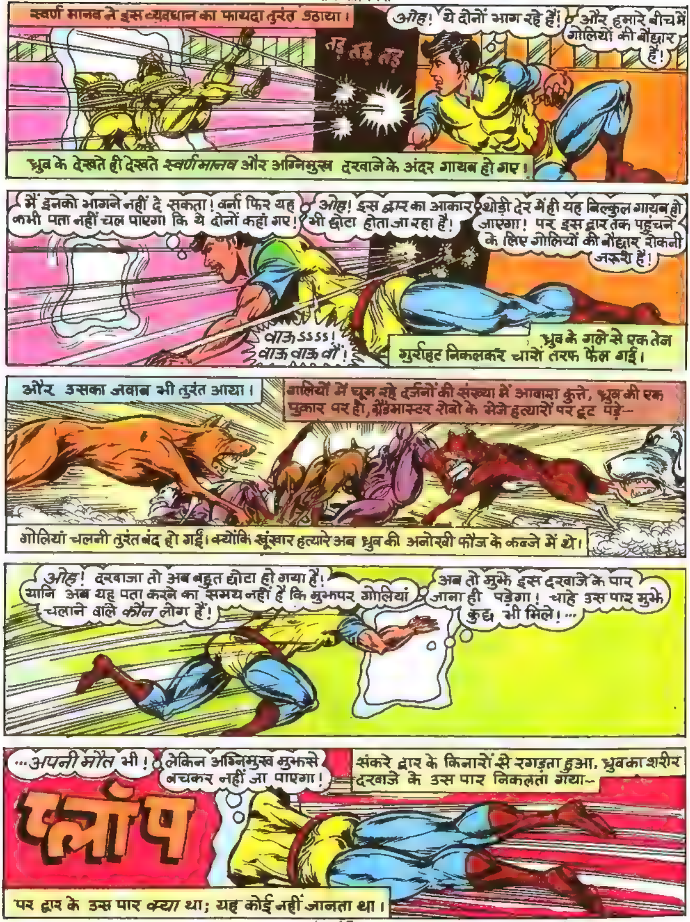
स्वर्ण मानव ने इस व्यवधान का फायदा तुरंत उठाया।
ओह! ये दोनों भाग रहे हैं!
और हमारे बीच में गोलियों की बौछार है!
तड़ तड़ तड़
ध्रुव के देखते ही देखते स्वर्ण मानव और अग्निमुख दरवाजे के अंदर गायब हो गए।
मैं इनको भागने नहीं दे सकता! वर्ना फिर यह कभी पता नहीं चल पाएगा कि ये दोनों कहां गए!
ओह! इस द्वार का आकार भी छोटा होता जा रहा है।
थोड़ी देर में ही यह बिल्कुल गायब हो जाएगा। पर इस द्वार तक पहुंचने के लिए गोलियों की बौछार रोकनी जरूरी है!
वाऊ SSSS! वाऊ वाऊ वौं!
ध्रुव के गले से एक तेज गुर्राहट निकलकर चारों तरफ फैल गई।
और उसका जवाब भी तुरंत आया।
गलियों में घूम रहे दर्जनों की संख्या में आवारा कुत्ते, ध्रुव की एक पुकार पर ही, ग्रैंडमास्टर रोबो के भेजे हत्यारों पर टूट पड़े--
गोलियां चलनी तुरंत बंद हो गईं। क्योंकि खूंखार हत्यारे अब ध्रुव की अनोखी फौज के कब्जे में थे।
ओह! दरवाजा तो अब बहुत छोटा हो गया है! यानि अब यह पता करने का समय नहीं है कि मुझपर गोलियां चलाने वाले कौन लोग हैं!
अब तो मुझे इस दरवाजे के पार जाना ही पड़ेगा! चाहे उस पार मुझे कुछ भी मिले! ...
...अपनी मौत भी!
लेकिन अग्निमुख मुझसे बचकर नहीं जा पाएगा!
संकरे द्वार के किनारों से रगड़ता हुआ, ध्रुव का शरीर दरवाजे के उस पार निकलता गया--
फ्लॉप
पर द्वार के उस पार क्या था; यह कोई नहीं जानता था।

दूसरी तरफ - समुद्र के तल में बसी एक रहस्यमय स्वर्ण नगरी अपने विनाश का इंतजार कर रही थी।
मास्टर! हमारे सारे घातक हथियार अपने-अपने स्थान पर फिट हो चुके हैं!
अब आपके एक इशारे पर हम इस मूंगे की दीवार को मिट्टी में मिला देंगे!
शाबास, मेरे कमांडर! आदेश की प्रतीक्षा करो!
और - राजनगर में --
श्वेता, मेरी बच्ची! तू कहां रह गई थी?
भगवान का लाख-लाख शुक्र है, कि यह सही-सलामत लौट आई!
चलो, रेणु! अपना यहां का काम तो खत्म हुआ!
अब हम को अग्निमुख की तलाश में फिर... अरे!
पिंग पिंग! पिंग पिंग!!
मेरे पॉकेट-ट्रांसमीटर पर ये इमर्जेंसी सिग्नलें कहां से आ रहे हैं?
यह तो चंडिका के सिग्नल हैं!
चंडिका के? पर मेरा ट्रांसमीटर तो मेरी बेल्ट पर...
ओह नो! अब याद आ रहा है! जब मैंने पोशाक बदली थी, तो बेल्ट पर से ट्रांसमीटर गायब था!
पिंग पिंग
हमको इन सिग्नलों के सहारे तुरंत चंडिका तक पहुंचना होगा! शायद उसने अग्निमुख को ढूंढ निकाला है!
हम भी चलते हैं! आओ, श्वेता!
नहीं, मम्मी! अब मैं स्कूल आ ही गई हूं तो थोड़ा झूला झूलकर वापस जाऊंगी! तुम जाओ, और फिर कार को वापस भेज देना!
अभी-अभी एक्सीडेंट से बचकर आई हो, और अभी तुमको खेल सूझ रहा है?
जो मर्जी आए, वह करो! लेकिन इधर-उधर मत जाना!
अब मुझे यह पता करना है, कि वह कौन चोर है, जो मेरा ट्रांसमीटर चुरा कर ले गया!
मगर बेवकूफ गलती से बटन दबा बैठा और सिग्नल आने लगे!... अब मुझे ही उसका सिग्नल जाकर बंद करना पड़ेगा!

करीम और रेणु सिग्नलों का पीछा करते-करते समुद्र तट तक आ गए थे–
कमाल है! ये सिग्नल तो समुद्र से आ रहे हैं!
तो अब क्या तैरने की तैयारी करें?
इसकी जरूरत नहीं पड़ेगी, रेणु!
उधर देखो! एक मोटरबोट खाली खड़ी हमारा ही इंतजार कर रही है।
एकदम फिल्मी स्टाइल में।
अरे! यह तो वही स्टार मोटरबोट है, जो पीटर लेकर आया था!!
लेकिन ध्रुव और पीटर तो आसपास कहीं नजर नहीं आ रहे हैं!
कहीं ये सिग्नल उन के ही तो नहीं हैं?
पिंग पिंग पिंग
हो सकता है! मोटरबोट में ऑक्सीजन मास्क भी सिर्फ एक ही है।
आओ, देखते हैं!
और रहस्यमय स्वर्ण नगरी में–
शाबास, धनंजय! हमको पूरा विश्वास था, कि तुम इस दुष्ट अग्निमुख को वापस लाने में अवश्य सफल होगे!
यह आपका आशीर्वाद है, श्रीमान!
वर्ना मुझे तो एक मानव ने बंदी बना लिया–!
तभी –
कौन है?
हे देव!
यही था वह मानव!!
यह यहां तक आ पहुंचा?
आश्चर्य है!
पकड़ लो इसको!

अपने चारों तरफ के नए वातावरण को देखकर ध्रुव पलभर के लिए भौंचक्का रह गया।
और जब तक वह संभल पाता, दो जोड़ी शक्तिशाली बांहें उसे जकड़ चुकी थीं।
यह तो वही 'स्वर्ण नगरी' लगती...
लेकिन ध्रुव ने संभलने में ज्यादा वक्त नहीं लिया।
मैं तुम लोगों से लड़ना नहीं चाहता।...
आह!
..लेकिन शुरुआत तुम लोगों ने ही की है!...
..और मुझे अपनी रक्षा तो करनी ही पड़ेगी।
धाड़.
ठहर जाओ, बालक!
तुम ऐसे पहले मानव हो, जो अपनी इच्छा से हमारी स्वर्ण-नगरी में आया है!
तुम कौन हो? और तुम्हारे यहां आने का क्या कारण है?
मेरा नाम ध्रुव है!
और मैं अग्निमुख को यहां से ले जाने के लिए आया हूं!

हम इसकी आज्ञा नहीं दे सकते, ध्रुव!
इस नगरी में आने के बाद कोई धरती-वासी वापस नहीं जा सकता! और फिर अग्निमुख तो हमारा अपराधी है!
अपराधी? पर..पर ये अग्निमुख कौन हैं?
आप लोग कौन हैं? और आप समुद्र के अंदर क्यों रहते हैं?
अग्निमुख कौन है; इसका उत्तर तो तुमको मालूम होना चाहिए! क्योंकि यह भी तुम्हारी तरह धरती-वासी ही है!
वैसे तो हम लोग भी मानव ही हैं! और पृथ्वी के ही वासी हैं!
परंतु हमने तो आपके बारे में कभी नहीं सुना!
सुना नहीं, तो पढ़ा जरूर होगा! अपने पुराणों और प्राचीन कथाओं में!
हमारी सभ्यता युगों पुरानी है, ध्रुव! तुम्हारी धरती की किसी भी सभ्यता से लाखों वर्ष पुरानी! हम लोग उस युग के हैं, जिसकी कहानियां तुम पुराणों में पढ़ते हो!
ब्रह्मास्त्र, दिव्य अस्त्र, पुष्पक विमान जैसी अद्भुत वस्तुएं हमारे युग की ही हैं! महाभारत के युद्ध में हमारे पुरखे भी लड़े थे!
लेकिन फिर प्रलय आ गई! पूरी पृथ्वी पानी से भर गई! उस समय हमने समुद्र के अंदर इस स्वर्ण नगरी का निर्माण किया; और यहीं रहने लगे!
हमारा ज्ञान-विज्ञान युगों पहले भी काफी उन्नत था! और तब से अब तक हमारे विज्ञान ने जितनी प्रगति कर ली है, वह तो धरतीवासियों को जादू के समान लगेगी!
पर आप इस विज्ञान को धरती-वासियों के साथ क्यों नहीं बांटते?
क्योंकि तुम लोग हिंसक और क्रूर हो! तुम लोग इस विज्ञान का इस्तेमाल युद्ध के लिए करोगे!
यही कारण है कि, हम धरती-वासियों के संपर्क में नहीं आना चाहते!
अब तक तो मूंगे की चट्टानी दीवार ने हम लोगों को छुपा कर रखा था!
लेकिन इस दुष्ट अग्निमुख ने उस को तोड़कर हमें दुनिया वालों के सामने ला दिया!
यह तो उस धमाके से लगभग मर चुका था!
...लेकिन यह हमारी ही भूल थी, कि हमने इसपर तरस खाकर इसके शरीर में फिर से जान डाली!

लेकिन हम को यह पता नहीं था कि न्यूक्लियर धमाके की वजह से...
...यह मानव से एक आग उगलते दानव के रूप में बदल गया है। इस घटना से हम भी अचंभित रह गए।
और इसका फायदा उठा कर अग्निमुख तबाही मचाता हुआ, इस नगरी से भाग निकला।
उसको इस विनाश के अपराध की सज़ा देने के लिए, अग्निमुख को पकड़ कर वापस लाना ज़रूरी था।
इससे पहले कि हम इस का पीछा कर पाते, हमको सूचना मिली, कि कुछ अन्य समुद्री जीव भी इस धमाके से आग उगलते जीवों के रूप में बदल गए हैं।
वे हमारे लिए खतरा बन सकते थे, इसीलिए हमने पहले उनको पकड़ कर कैद करना शुरू किया।
फिर भी, एक ऐसा जीव हमारी पकड़ से बचकर भाग निकला। उसने कुछ गोताखोरों को मार भी डाला। हमारे सामने उसके खत्म कर देने के अलावा और कोई चारा नहीं था। लेकिन हमारे ऐसा करने से पहले ही न जाने किसने उसे खत्म कर दिया।
उसको मैंने ही खत्म किया था।
क्योंकि उसने मुझपर भी हमला करने की...
अरे!
मेरे 'स्टार-ट्रांसमीटर' पर ये इमर्जेंसी सिग्नल कहां से आ रहे हैं?
लेकिन इससे पहले कि ध्रुव कुछ अनुमान लगा पाता...
...भीषण धमाकों की कई आवाज़ों ने पूरी स्वर्ण नगरी को कंपकपा डाला।
यह क्या है?

यह धमाके मूंगे की चट्टानों के चकनाचूर होने का ऐलान थे। स्वर्ण नगरी की चारदीवारी ढह चुकी थी।
चट्टानों पर लगे दर्जनों शक्तिशाली बमों ने अपना काम कर दिया था–
अब हमारे रास्ते में कोई बाधा नहीं है, कमांडर!
शाबास! अब तुम सब इस स्वर्ण नगरी को घेर कर मेरे इशारे का इंतज़ार करो! सबसे पहले मुझे अकेले आगे जाने दो!
क्यों, कमांडर?
अगर इस नगरी में कोई रहता है, तो हमारी कोशिश होगी, कि वे आत्म-समर्पण कर दें! ताकि हम बगैर किसी नुक्सान के इस नगरी पर कब्ज़ा कर लें!
वाह! क्या ज़ोरदार आइडिया है!!
इसी दिमाग के कारण ही तो इनको कमांडर बनाया गया है!
और स्वर्ण नगरी में–
हम पर आक्रमण हो रहा है!
हे देव! जिसका डर हमें युगों से था, वही बात सामने आ गई!
इसमें घबराने की क्या बात है? हम मुकाबला करेंगे!
हमने युगों से किसी के साथ युद्ध नहीं किया है! हमारी युद्ध करने की क्षमता एकदम शून्य हो गई है!
अब हमारा विनाश निश्चित है!
नहीं! मेरे रहते इस नगरी को कोई नुक्सान नहीं पहुंच सकता!
बाहर चाहे कितनी भी बड़ी फौज क्यों न हो,...
मैं उनको हराने का रास्ता निकाल ही लूंगा!
मुझको अपने लिए सिर्फ एक ऑक्सीजन मास्क चाहिए!
उसकी तुमको कोई जरूरत नहीं पड़ेगी! हम तुम्हारे गले में एक ऐसा यंत्र लगा देंगे, जिससे तुम पानी में सांस ले सकोगे! ठीक मछलियों की तरह!
और इसमें लगे एक खास पुर्जे की मदद से तुम बात भी कर सकोगे!

और सिर्फ पांच मिनट बाद- ध्रुव, एक 'वॉटर-टैंक' में उस यंत्र का परीक्षण कर रहा था।
यह तो जादू है!
मुझे तो अब भी यकीन नहीं हो पा रहा है!
हम पहले ही कह चुके हैं कि हमारे यहां की कई चीजें तुमको जादू का यंत्र लगेंगी! जब कि यह सब विज्ञान का चमत्कार...!
हमारी नगरी की तरफ एक मानव बढ़ रहा है, श्रीमान!
क्या?
यह अकेला आ रहा है! मेरे ख्याल से इस के पास हमारे लिए कोई संदेश है!
मैं बाहर जाकर इससे मिलता हूं!
कुछ ही देर में- ध्रुव और कमांडर आमने-सामने खड़े थे।
तुम...तुम तो ध्रुव हो!! तुम यहां क्या कर रहे हो?
औ...और तुम पानी में सांस कैसे ले रहे हो?
अपनी ऑक्सीजन खराब मत करो! मतलब की बात करो! कौन हो तुम लोग, और क्या चाहते हो?
मुझे तो अपना संदेश बस स्वर्ण-नगरी के वासियों को देना था, ध्रुव!
लेकिन तुम्हारे यहां पर होने ने तो सारे काम को एकदम आसान कर दिया!
मतलब की बात करो!
तो ध्यान से सुनो! हम ग्रैंडमास्टर रोबो की अटैक फोर्स के कमांडर हैं! मुझे, सिर्फ इतना कहना है कि...
ग्रैंडमास्टर रोबो!
यानि इस पूरे विनाश के पीछे, ग्रैंडमास्टर रोबो का हाथ है!! मुझे रोबो के किसी भी गुंडे के मुंह लगना पसंद नहीं! जाकर अपने बॉस से कह दो, कि वह खुद आकर मुझसे बात करे!...

सामने आते ही ध्रुव उसकी ज़िंदगी का फैसला...
तुम तैश में बहुत जल्दी आते हो, ध्रुव! पहले हमारी पूरी बात तो सुनो!...
हमको सिर्फ इतना ही कहना है कि ...
...तुम लोग स्वयम सुरक्षित हो! बाहर खड़ी अटैक फोर्स के सारे हथियार मैंने बेकार कर दिए हैं!
क्या!?
ग्रैंडमास्टर के गुप्त अड्डे में मैंने एक ट्रांसमीटर फिट कर दिया है! उसके सिग्नलों की मदद से तुम उसके अड्डे तक पहुंच सकते हो!
ये रहा उन सिग्नलों को पकड़ने के लिए रिसीवर!
इसकी कोई ज़रूरत नहीं है! मेरा 'स्टार-ट्रांसमीटर' सिग्नल पकड़ रहा है!
ठीक है! इससे आगे हम तुम्हारी मदद नहीं कर सकते! आगे का काम तुमको अपने आप ही करना पड़ेगा!
लेकिन यह सारे भेद तुम मुझे क्यों बता...?
गुडबाय, मि० ध्रुव! बेस्ट ऑफ लक!
यह क्या चक्कर है? कहीं यह रोबो का कोई नया प्लान तो नहीं है? लेकिन मेरे सामने और कोई रास्ता नहीं है! मुझे इसकी बात पर भरोसा करने का खतरा उठाना ही पड़ेगा!
और फिर-
...तो ये परिस्थिति है!
हां! रोबो की अटैक फोर्स के हथियार चाहे बेकार हो गए हों, पर फिर भी वे सब पेशेवर हत्यारे हैं!
उनसे निपटने के लिए हमको कुछ मदद चाहिए!
पर क्या? हमारे पास तो ऐसा कोई अस्त्र नहीं है, जो इस युद्ध में तुम्हारी मदद कर सके!
हूं!... वे आग उगलते समुद्री जीव, जिनको आप लोगों ने पकड़ कर रखा हुआ है!
ऐसा एक भयंकर जीव, इस पूरी फौज के लिए काफी होगा!
सच में! कमाल है! यह विचार हमारे दिमाग में क्यों नहीं आया?

और सतह पर—
सिग्नल समुद्र के अंदर से आ रहे हैं, रेणु! हमारे ठीक नीचे से! हम को पानी के अंदर जाना पड़ेगा!
यह काम हम में से कोई एक ही कर सकता है! क्योंकि बोट में ऑक्सीजन मॉस्क सिर्फ एक ही है!
और उसे मैं पहन चुकी हूं!
?
?
चंडिका! तुम?... तुम बोट में कैसे...?
हम तो यह समझ रहे थे कि ये सिग्नल तुम भेज रही हो!
तुम लोग गलत भी समझ रहे थे, और सही भी!
सिग्नल मेरे ट्रांसमीटर के ही हैं! लेकिन उसे मैं नहीं भेज रही हूं!
अब तुम दोनों अच्छे बच्चों की तरह मेरा इंतजार करो!...
लौटते में मैं तुम दोनों के लिए एक एक मछली ले कर आऊंगी!
गई!
अब तो हम इंतजार करने के अलावा कुछ कर भी नहीं सकते!
और समुद्र के अंदर—
क्या हुआ, कमांडर?
उन लोगों ने सोचने के लिए थोड़ा वक्त मांगा है!
मुझे ध्रुव को कोई योजना बनाने के लिए थोड़ा वक्त देना ही पड़ेगा!
पर तभी-
कमांडर! कोई हमारी तरफ आ रहा है!
यह तो ध्रुव है! हमारा जानी दुश्मन!
ओह! यानि ध्रुव ने इतनी जल्दी कोई योजना बना ली!
अटैक!
सभी की उंगलियां अपने-अपने हथियारों पर दब गईं। लेकिन—
क्लिक
कट
कमांडर! मेरा हथियार काम नहीं कर रहा है!
मेरा भी नहीं!
किसी ने हमारे हथियार बेकार कर दिए हैं!
...यानि कमांडर की सूचना सही थी! वैरी गुड! यानि अब अटैक करने की बारी हमारी है!...

धनंजय!
और अगले ही पल धनंजय अपनी भयंकर सवारी के साथ शेबो के भौंचक्के हत्यारों पर टूट पड़ा।
आग उगलते समुद्री दैत्य की एक झलक ही सबके होश उड़ा देने के लिए काफी थी।
लड़ाई होने का तो कोई प्रश्न ही नहीं था।
देखते ही देखते शेबो के कई गुंडे तो भाग खड़े हुए।
कुछ भूखे समुद्री जीव का भोजन बन गए।
और कुछ डर के मारे बेहोश हो गए।
लड़ाई शुरू होने से पहले ही खत्म हो गई।

ग्रैंडमास्टर रोबो की अटैक फोर्स तो गई
हां। पर तुम यह सब क्यों कर र ?
समझाने का समय मेरे पास नहीं है। अब तुम्हें ग्रैंडमास्टर रोबो के अड्डे को जल्दी से जल्दी नष्ट करना होगा।
उसको मैं नष्ट कैसे करूंगा?
पर तुम्हारे पास एक ऐसा आदमी है, जो उस अड्डे के बारे में जानता भी है और उसे नष्ट करने की शक्ति भी रखता है
कमांडर!
कौन है ऐसा आदमी?
वह आदमी है..
क्यों, शिहती? ग्रैंडमास्टर रोबो ने तो तुमको मार डालने में कोई कसर नहीं उठा रखी थी
आज तुम्हारी यह दुर्दशा सिर्फ एक आदमी के कारण है और वही आदमी तुम्हारा एकमात्र दुश्मन है
ग्रैंडमास्टर रोबो!
सच है।
वही आदमी जिसका नाम है,
मैं उसको जिंदा नहीं छोड़ूंगा।

और गुप्त अड्डे पर—
मास्टर! गजब हो गया! किसी ने हमारे साथ जबर्दस्त गद्दारी की है!
क्या?
हां, मास्टर! किसी ने 'हमारी' अटैक फोर्स के सारे हथियार बेकार कर दिए!
और फिर 'स्वर्ण नगरी' में रहने वालों ने उन सबको गाजर-मूली की तरह काट डाला!
हे शैतान! तुमको यह सब कैसे पता चला?
अभी-अभी 'अटैक फोर्स' के कमांडर का मैसेज आया था! आप का जानी दुश्मन ध्रुव भी स्वर्ण-नगरी वालों से आ मिला है! और... और अब मिस्टी भी उनके ही साथ है!
वे अब हमारे इस अड्डे की तरफ ही आ रहे हैं!
कमांडर ने आपसे तुरंत भाग निकलने के लिए कहा है!
कमांडर का मैसेज एकदम सही था।
ध्रुव और कमांडर के साथ अड्डे की तरफ बढ़ता अग्निमुख, ग्रैंडमास्टर को खत्म कर देने के लिए बेताब हो रहा था—
पीप पीप पीप
जब तुमको और अग्निमुख को अड्डे का रास्ता पता ही था, तो वहां ट्रांसमीटर फिट करने की क्या जरूरत थी?
क्योंकि ग्रैंडमास्टर का अड्डा कभी एक जगह पर नहीं रहता!...
वह अपनी जगह बदलता रहता है!
सिग्नल यहीं कहीं से आ रहे हैं, कमांडर! लेकिन यहां तो आस-पास कोई इमारत जैसी चीज नजर नहीं आ रही!
पींप पींप
अपने दाईं तरफ देखो, ध्रुव!...

ध्रुव ने अपनी दाहिनी तरफ देखा, और वह आश्चर्यचकित रह गया।
!
यह तो व्हेल मछली है!
विशालकाय ब्लू व्हेल!
पींप
पींप
यह ब्लू व्हेल नहीं है!
बल्कि ब्लू व्हेल के रूप की एक न्यूक्लियर पनडुब्बी है!
यही ग्रेंडमास्टर रोबो का गुप्त अड्डा है, ध्रुव!
इससे पहले कि आश्चर्यचकित ध्रुव कुछ बोल पाता, पनडुब्बी के सिर पर एक दरवाजा खुला—
और उसमें से 'वाटर-स्कूटर' पर सवार एक आकृति तेजी से बाहर निकली।
यह तो ग्रेंडमास्टर रोबो है! ... और यह भाग रहा है!
पर मैं इसको भागने नहीं दूंगा।
इसका पीछा करने का ख्याल छोड़ दो, ध्रुव!
तुम तैर कर इस 'वाटर-स्कूटर' को कभी पकड़ नहीं सकते!

अगर ऐसा है तो मुझे भी अपने लिए सवारी का इंतजाम करना पड़ेगा।
हीईईईट!
ध्रुव के मुंह से एक सीटी निकली और पानी में तरंग बनकर फैलने लगी।
ध्रुव का दोस्त ज्यादा दूर नहीं था।
कुछ ही पलों में ध्रुव को अपनी तरफ तेजी से आती एक आकृति दिखने लगी–
डॉल्फिन!
चलो, डॉल्फिन!
आओ, अग्निमुख!
लेकिन अग्निमुख का ध्यान न्यूक्लियर पनडुब्बी के 'रिएक्टर' ने खींच लिया था।
उसकी एनर्जी की भूख एक बार फिर भड़क उठी थी–
ध्रुव को अग्निमुख की अब कोई जरूरत भी नहीं थी।
यह 'स्कूटर' तो सच में बहुत तेज चल रहा है!
डॉल्फिन इसका पीछा नहीं कर सकती!
और मैं रोबो को पकड़ नहीं सकता!
डॉल्फिन भी यह बात शायद समझ गई है! यह वापस पलट रही है!
नहीं! यह तो उस सुरंग की तरफ जा रही है!

यह जरूर कोई छोटा रास्ता है! शॉर्ट कट!
ध्रुव का ख्याल सही था।
सुरंग से बाहर निकलते ही, उसका सामना अपनी तरफ आते रोबो से हो गया–
?
रोबो ने सामने खतरा देखकर स्कूटर को मोड़ने की कोशिश की–
लेकिन डॉल्फिन तब तक उस तक पहुंच चुकी थी।
उसके एक भीषण धक्के से स्कूटर दूर जा गिरा–

बस, दोस्त! अब यहां से मैं इसको संभाल लूंगा!
अब दो जानी दुश्मन आमने सामने थे।
और दोनों ही जानते थे कि ज़िंदा रहने की सिर्फ एक ही सूरत है–
अपने दुश्मन की मौत!
आश्चर्य है! यह पानी में सांस ले रहा है!
मुझे बहुत सतर्क रहना होगा!
मैं इसकी मशीनी शक्ति का मुकाबला नहीं कर सकता!
और वहां से थोड़ी दूर पर-
अग्निमुख पनडुब्बी के अंदर घुसने का रास्ता बना चुका था–
अब उसके सामने लगा 'न्यूक्लियर रिएक्टर' उसको खुला आमंत्रण दे रहा था।
और उसको रोकने वाला कोई भी नहीं था।
महीनों के भूखे की तरह अग्निमुख के दोनों हाथ रिएक्टर के ऊपर कस गए–
और रिएक्टर से निकलती प्रचंड एनर्जी उसके शरीर में तेजी से समाने लगी।

दूसरी तरफ - ग्रेंडमास्टर रोबो ध्रुव को खत्म कर देने के लिए पागल हो रहा था।
आज तेरी ही वजह से मेरा गैंग तबाह हुआ है, ध्रुव!
मैं तुझे जिंदा नहीं छोड़ूंगा!
तुमको तुम्हारी दुनिया पर राज करने की हवस ने तबाह किया है, रोबो!...
तुमको उन लाखों लोगों की आह ने तबाह किया है,...
जिनकी लाशों पर तुम ने अपना साम्राज्य बनाया था।
तुम्हारा वह साम्राज्य तो साथ तुम्हारे भी खत्म हो गया, रोबो!...
अब उसके साथ-तू खत्म होने की बारी है!
मेरी नहीं, छोकरे! तुम्हारे खत्म होने की बारी है!
आज मेरे हाथों से बनी लाखों लाशों में, एक लाश और जुड़ जाएगी!
रोबो के शरीर में मौजूद मशीनी शक्ति के सामने, ध्रुव अपने आप को बेबस महसूस कर रहा था—
आह! मुझसे... सांस नहीं... ली... जा रही है!

ध्रुव का दम घुट रहा था। और उसके चेहरे पर मौत का नीलापन उभर रहा था–
लेकिन उसका दिमाग अभी भी ग्रैंडमास्टर रोबो की उस कमजोरी पर था...
...जिससे उसका शरीर आज़ाद था। ध्रुव के एक झटके से रोबो का मॉस्क उसके चेहरे से अलग हो गया–
खेल पलट चुका था–
रोबो ने घबरा कर भागने की कोशिश की। लेकिन ध्रुव की पकड़ ऑक्टोपस के शिकंजे जैसी मजबूत थी–
अब इसके बेहोश होने में ज्यादा समय नहीं है।...
एक बार यह बेहोश हो जाए, फिर मैं...
आआह!
पीछे से एक जबर्दस्त वार हुआ–
और ध्रुव का दिमाग अंधकार में डूबता चला गया।
लेकिन अब तक सिग्नलों का पीछा कर रही चंडिका वहां तक पहुंच गई थी–
ओह! यह क्या?
चीते की तरफ झपट्टा मारकर, चंडिका ने ध्रुव पर हमला करने वाले को अपनी गिरफ्त में ले लिया।
ग्रैंडमास्टर, भागो! इसको संभालने का काम मुझपर छोड़ो! भागो!
ग्रैंडमास्टर रोबो कुछ पलों तक आश्चर्य से देखता रहा–
और फिर अपने चेहरे पर मॉस्क, दुबारा फिट कर के...
...पानी की घनी परतों के बीच ओझल हो गया।
हमको आपस में लड़ने की जरूरत अब नहीं है, चंडिका!...

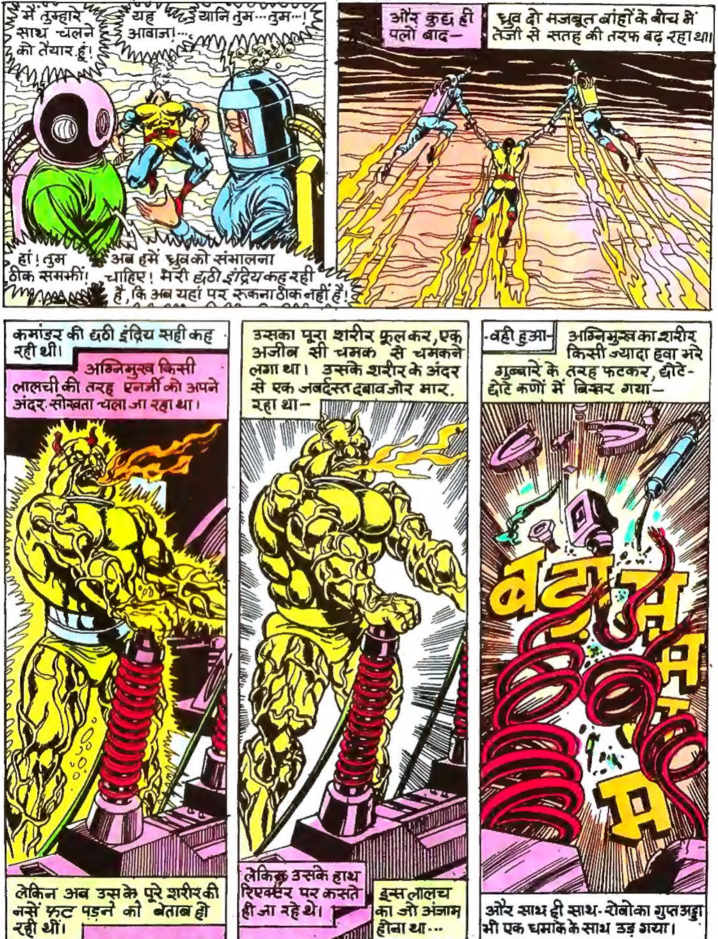
मैं तुम्हारे साथ चलने को तैयार हूं!
यह आवाज़!...
यानि तुम...तुम...!
हां! तुम ठीक समझीं!
अब हमें ध्रुव को संभालना चाहिए! मेरी छठी इंद्रिय कह रही है, कि अब यहां पर रुकना ठीक नहीं है!
और कुछ ही पलों बाद—
ध्रुव दो मजबूत बांहों के बीच में तेजी से सतह की तरफ बढ़ रहा था।
कमांडर की छठी इंद्रिय सही कह रही थी।
अग्निमुख किसी लालची की तरह एनर्जी को अपने अंदर सोखता चला जा रहा था।
लेकिन अब उसके पूरे शरीर की नसें फट पड़ने को बेताब हो रही थीं।
उसका पूरा शरीर फूल कर, एक अजीब सी चमक से चमकने लगा था। उसके शरीर के अंदर से एक जबर्दस्त दबाव जोर मार रहा था—
लेकिन उसके हाथ रिएक्टर पर कसते ही जा रहे थे।
इस लालच का जो अंजाम होना था...
-वही हुआ-
अग्निमुख का शरीर किसी ज्यादा हवा भरे गुब्बारे के तरह फटकर, छोटे-छोटे कणों में बिखर गया—
और साथ ही साथ-रोबो का गुप्त अड्डा भी एक धमाके के साथ उड़ गया।

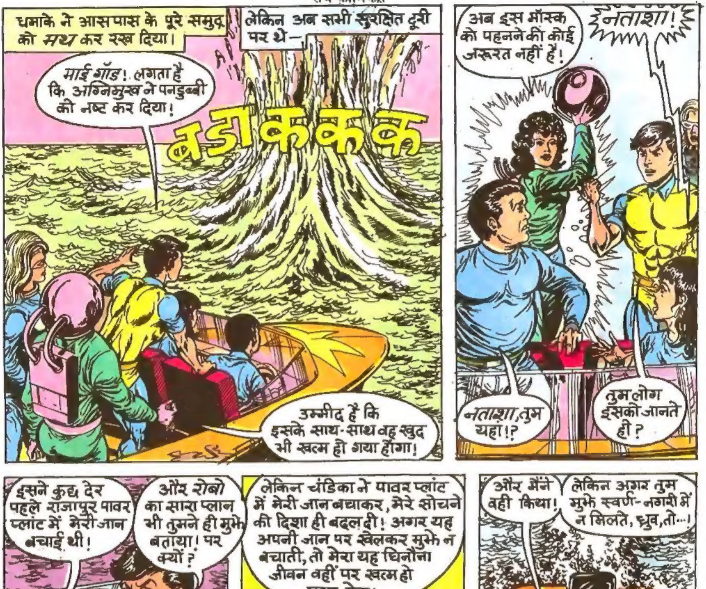

धमाके ने आसपास के पूरे समुद्र को *मथ* कर रख दिया।
लेकिन अब सभी सुरक्षित दूरी पर थे—
माई गॉड! लगता है कि अग्निमुख ने पनडुब्बी को नष्ट कर दिया!
धड़ाककक
उम्मीद है कि इसके साथ-साथ वह खुद भी खत्म हो गया होगा!
अब इस मॉस्क को पहनने की कोई जरूरत नहीं है!
नताशा!
नताशा, तुम यहां!?
तुम लोग इसको जानते हो?
इसने कुछ देर पहले राजापुर पावर प्लांट में मेरी जान बचाई थी!
और रोबो का सारा प्लान भी तुमने ही मुझे बताया। पर क्यों?
मैं ग्रैंडमास्टर रोबो के गैंग में शामिल जरूर थी, और राजापुर एटॉमिक पावर प्लांट से, बम बनाने की सारी जानकारी, मैंने ही रोबो तक पहुंचाई थी!...
लेकिन चंडिका ने पावर प्लांट में मेरी जान बचाकर, मेरे सोचने की दिशा ही बदल दी! अगर यह अपनी जान पर खेलकर मुझे न बचाती, तो मेरा यह घिनौना जीवन वहीं पर खत्म हो गया होता!
मैंने वहीं पर अपने इस नए जीवन को, अपराध के विरुद्ध लड़ने के लिए, समर्पित कर देने का निश्चय कर लिया।
और मैंने वही किया।
लेकिन अगर तुम मुझे स्वर्ण-नगरी में न मिलते, ध्रुव, तो...।
स्वर्ण-नगरी!
तुम लोग किनारे पर चलो!...

...मैं तुम लोगों से वहीं मिलता हूं।
अरे, पर ऑक्सीजन मॉस्क तो लेते जाओ!...
रहने दो, करीम! तुम्हारे कैप्टेन को अब ऑक्सीजन मॉस्क की जरूरत नहीं है!
पर क्यों? यह मुझे भी नहीं मालूम!
और स्वर्ण-नगरी में-
तुमने हमारी नगरी को बचाकर हम पर एक बड़ा उपकार किया है, ध्रुव! इसके लिए हम तुम्हारे हमेशा ऋणी रहेंगे!
यह नगरी हमारी खोई सभ्यता का जीता जागता प्रमाण है, धनंजय! इसको बचाकर मैंने तुमपर नहीं, बल्कि अपने आप पर एहसान किया है!
कुछ भी कहो, परंतु तुमने सतह-वासियों के बारे में हमारी विचारधारा को बदल दिया है!
अब एक दिन हम समुद्रवासी, धरती-वासियों से जरूर मिलने आएंगे!
यह हमारा वादा है!
विदा, स्वर्ण मानवो!
विदा, ध्रुव!
और फिर-राजनगर में-
अब तुम्हारा क्या इरादा है, नताशा?
मैं एक ट्रेंड जर्नलिस्ट भी हूं, ध्रुव! अब अपराधियों के साथ मैं गोलियों से नहीं, बल्कि कलम से लड़ूंगी!
मम्मी! जल्दी खाना दो! कस के भूख...!!
आओ, श्वेता! इनसे मिलो! यह है नताशा! एक होने वाली जर्नलिस्ट!
हैलो, नताशा!
हैलो, श..श्वेता!
ओ माई गॉड! इसने तो वही बुंदे पहन रखे हैं, जो चंडिका ने पहने हुए थे!!...

यानि यह कोमल सी,शरारती लड़की श्वेता ही, जांबाज और तूफानी चंडिका है!! और शायद ध्रुव भी इस राज को नहीं जानता!
यह मेरे बुंदों की तरफ गौर से देख रही है!
यानि यह समझ गई है कि मैं ही चंडिका हूं!
कुछ देर तक दोनों एक-दूसरे को गौर से देखती रहीं।
दोनों ही एक-दूसरे के मन की बातें आंखों में पढ़ रही थीं–
?
घबराओ मत, श्वेता! तुम्हारे राज को मैं राज ही रखूंगी!
थैंक्यू, नताशा! थैंक्यू!
तभी ध्रुव की आवाज़ ने दोनों का ध्यान भंग कर दिया–
तुम्हारी एक बात मुझे अबतक समझ में नहीं आई, नताशा!
क्या, ध्रुव?
तुमने ग्रैंडमास्टर रोबो से गद्दारी करने के बाद भी, उसकी भाग जाने में मदद क्यों की?
मैं ग्रैंडमास्टर रोबो के अपराध-साम्राज्य के खत्म करने में तो तुम्हारी मदद कर सकती थी, ध्रुव! पर ग्रैंडमास्टर को खत्म करने में कभी नहीं!
पर क्यों, नताशा?
क्यों?
क्योंकि,... ग्रैंडमास्टर रोबो,... मेरे पिता हैं!
समाप्त